सिर्फ ७० मिनिट में आपकी सारी भ्रमणाएँ दूर

महामारी के भीतर

अनेक वैज्ञानिक तथ्यों एवं प्रूफों के साथ

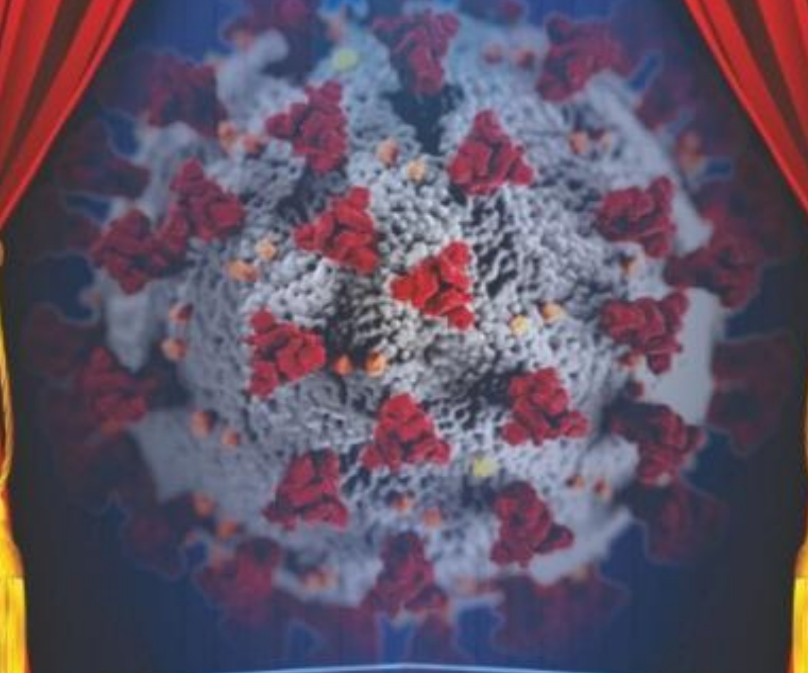

यह कोई अफवा नही है, किन्तु एक अकल्पनीय वास्तविकता है। मीडिया और आसपास के लोगो द्वारा पैदा हुई आपकी वर्तमान की मान्यता को थोडी देर के लिए भूलकर मुक्त मनसे यह पुस्तक पढने हेतु विनंति...

सारांश

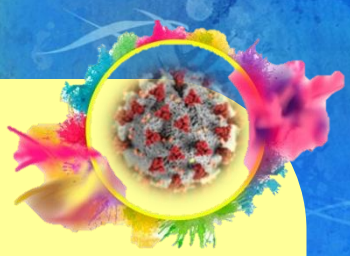

- कोरोना कोई महामारी नहीं है, मात्र सामान्य वायरस है |
  आज भी १०० में से मात्र एक की ही मृत्यु हो रही है |
- WHO की स्पष्टता के अनुसार कोरोना स्पर्श से फैलनेवाला रोग नहीं है |
- जिसके टीके उपलब्ध है ऐसे सामान्य फ्लू से ज्यादा लोग मरते है एवं
  जिसके टीके एवं दवा नहीं है ऐसे कोरोना रोग से कम लोग मर रहे है |
- मरनेवाले अधिकतर होस्पिटलों में ही मर रहे है | उनके मुख्य २ कारण-८६% मरनेवालो को केंसर जैसे भारी रोग थे ही, एवं कोई भी वैज्ञानिक आधार बिना दवाइओं का मात्र प्रयोग चल रहा है | अंगतस्करी के भी बहुत किस्से प्रकाशमें आए है |
- कोरोना टेस्ट किटकी ३० से ५० ही एक्युरसी है अर्थात् बाकि के ५०-७० % लोगों को गलत दिशा में ले जाया जा रहा है |
- हर वायरस समय आने पर ज्यादातर वसतिमें फैलता ही है, उसे रोका नहीं जा सकता | उसके लिए टेस्टिंग, मास्क, सोश्यल डिस्टन्स और लोकडाउन की कोई आवश्यकता नहीं है | ओक्सफोर्ड युनि. के महामारी निष्णांत डो. सुनेत्रा गुप्ता आदि अनेक निष्णांतो के एक जैसे ही अभिप्राय है की हर्ड इम्युनिटिसे ही ठीक हो सकते है, डरने जैसा नहीं है |
- प्रत्येक टीकामें पशु तथा मानव के खून का उपयोग होता है उन टीको की दिमाग आदि पर दूरगामी गंभीर खराब असर होती है | यह slow poison है जिससे दूर रहने में ही होंशियारी है |

कोरोना षड्यंत्रमें कौन शामिल है ?
किस हेतु यह षड्यंत्र चल रहा है ?
उनका आगे का प्लान क्या है, सरकार क्यों चुप है ?
मीडिया का इस षड्यंत्र में क्या रोल है ?

यह सभी जानकारी हेतु अवश्य पढे यह पुस्तिका

महामारी के भीतर

अनेक वैज्ञानिक तथ्यों एवं प्रूफो के साथ

ॐ पीठबळ ॐ

युगप्रधान आचार्यसम प. पू. पं.

श्री चंद्रशेखर विजयजी महाराजा

पूज्यपाद आचार्यदेव

श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म. साहेब

ॐ लेखक ॐ

परमपूज्य पंन्यास प्रवर

श्री धर्मबोधिविजयजी म. साहेब

चरणकिंकर

मुनि नयबोधिविजय

प्रकाशन : 5-11-2020 मूल्य : 18/-

यह पुस्तिका के विषय में कोई शंका हो, कोई जानकारी चाहिए,
अथवा इस आपत्ति में से बहार निकलने का कोई उपाय आपके पास हो,
तो संपर्क करें |

परमपूज्य पंन्यास प्रवर श्री धर्मबोधिविजयजी म. साहेब

C/O. Navkar Sweet Mart
Opp. Big Vegetable Market
Jagmal Chowk, Junagadh-362001
M. 82003 89898

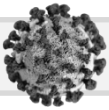

कोरोना कितना कातिल ?

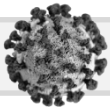

→ अमेरिका के **"ध वोशिंग्टन टाईम्स"** नामक सुप्रसिद्ध वर्तमानपत्र में दिनांक 28-4-2020 के ही समाचार ले लो, जिस में लिखा था कि, **'कोरोना मीडिया के द्वारा पेदा किया गया सबसे बड़ा झूठ है।'**

→ दिनांक 16-4-2020,' **'टाईम्स ऑफ इन्डिया'** में अमेरीका की विश्वविख्यात 'स्टेनफर्ड युनि.' के प्रोफेसर डॉ. जय भट्टाचार्य का निवेदन छपा था, 'विश्व स्वास्थ्य संगठनने कोरोना को जितना विनाशक माना था; (या प्रचारित किया था) उतना विनाशक सिद्ध नहीं हो पाया है।'

→ ब्रिटन सरकारने 19-1-2020 के दिन कोरोना को H.C.I.D. केटेगरी=अतिचेपी रोग कि कक्षा में गीना था | परन्तु 60 दिन के अनुभव के बाद 19-3-2020 को सामान्य फ्लु की कक्षामें डाल दिया |

→ दिनांक 26-3-2020 के 'न्यु इंग्लेन्ड जर्नल ऑफ मेडीसीन' नामक मेगेजीन के शब्द: 'कोरोना का असली मृत्युदर सिर्फ 0.1 % यानी' एक हजार में सिर्फ एक है, जो सामान्य फ्लु जितना ही है **(यानी कोरोना कोई महामारी नहीं है, अपितु सामान्य सर्दी-जुकाम-बुखार का रोग है)**

→ पुना की सिरम इन्स्टीटयुट के CEO अदार पूनमवाला कहते है कि: 'जितने टेस्ट हो रहे है, उसमें से सिर्फ 3 से 4 प्रतिशत ही पोज़िटीव आते है और उसमें भी सिर्फ 1 प्रतिशत की ही मृत्यु हो रही है, यह मृत्युदर तो भारत के वार्षिक कार हादसो से मरनेवालो से भी कम है, **अतः कोरोनो को महामारी नहीं कह सकते है |'**

भारत राष्ट्र में विविध कारणों से होनेवाली मृत्यु के आंकडे |

कारण	दैनिक मृत्यु औसत	वार्षिक मृत्यु औसत
कैन्सर	1917	6,99,705
टी. बी.	1369	4,99,685
भुखमरी	1643	5,99,695
दिल के दौरे	7650 आसपास	28,00,000 आसपास

भारत में कोरोना का प्रथम केस दर्ज हुआ, तब से लेकर आज दिन तक मृत्यु की दैनिक औसत 524 है जो सबसे कम है |

भारत में प्रतिदिन-25,000 मौत भारत में सालाना-91 लाख मौत गुजरात में प्रतिदिन-1150 मौत गुजरात में सालाना-4,19,750 मौत	अमेरिका का CDC (सेन्टर फॉर डिसिझ कंट्रोल) केंद्र : U. S. में हर साल ठंड में 3 करोड, 80 लाख लोगों को सामान्य फ्लु होता है, जिसमें से 50,000 की मौत आम बात है, इस साल फ्लु अतिशय कम लोगों को हुआ	(क्योंकि, उसके केस कोरोना में डाल दिये गये है)

हम सब कोरोना से बेहद डर गए है, कारण ?

कारण कि, इसे महामारी कहा गया है | परन्तु थोड़ी कोमन सेन्स लगाए तो कुछ अलग ही चित्र नजर आएगा...महामारी किसे कहते है ? जिसमें लोग **सूखी पत्तियों के तरह** मर जाए, कुटुंब के कुटुंब साफ़ हो जाए, मोहल्ले खंडहर में बदल जाए, एसी भयानक स्थिति खड़ी करदे, उसे महामारी कह सकते है |

जबकि, कोरोना को आए 8-8 महिने हो गए है और 140 करोड आबादी के भारत में मात्र 124256 मौतें ! इसे महामारी कौन कहेगा ? कोरोना चींटी है हाथी नहीं....एकदम सामान्य रोग है |

महामारी या घातक रोग किसे कहते है ? देखो...

कैंसर	100 में से (प्राय:)	100 की मौत
रैबीज	100 में से (प्राय:)	100 की मौत (यदि दवाई नहीं हुई तो)
बालामुथिला एन्सेफोलाईरिस	100 में से (प्राय:)	98 की मौत
ब्रेईन इटिंग अमीबा	100 में से (प्राय:)	95 की मौत
निपाह	100 में से (प्राय:)	75 की मौत
बर्ड फ्लु	100 में से (प्राय:)	65 की मौत

यदि कैंसर को महामारी नहीं गिनी जाती, तो 100 में से सिर्फ 1/2 मृत्युदर वालें कोरोना को महामारी क्यों कहेंगे ?

भूतकाल की महामारीयाँ

वर्ष	नाम	मृत्यु
1346-1353	प्लेग	20 करोड़
1911	कोलेरा	सिर्फ भारत में 8 लाख
1918	स्पेनिश फ्लु	विश्व में 5 करोड (भारत में 1 करोड़ से ज्यादा)
1957-58	एशियन फ्लु	20 लाख
1968	होंगकोंग फ्लु	10 लाख

W.H.O. ने अपना थूँका हुआ हि चाटने का काम किया

→ W.H.O. कहता है कि, कोरोना के टोटल केस में से 80 % को तो अस्पताल में जाने की या दवाई लेने की कोई जरुरत नहीं पडती हैं। घर पे ही ठीक हो जाते है। 15 % को फैमिलि डॉक्टर की दवाई से अच्छा हो जाता है, सिर्फ 5 % को ही अस्पताल की आवश्यकता रहती है।

→ और उपर बताये गये 80 % लोगों के लिए 'होम केर आइसोलेशन' की नियमावलि जारी की गई है, जिसमें बताया गया है कि, आराम कीजिए, मास्क पहनकर रखें, सैनिटाइजर से हाथ धोतें रहे, स्वच्छता रखें, सोश्यल डिस्टन्सिंग रखें, बस ! !! **(यानी कोई भी दवाई या परहेज के बिना भी आप स्वस्थ हो जायेंगे ! तो कोरोना को किस आधार पर महामारी कहा जाता हैं ?)**

→ उपरोक्त बात को ICMR नामक भारतीय हेल्थ एजन्सीने भी मान्यता दी है | और इस संस्था की रिपोर्ट के आधार से ही भारतीय स्वास्थ्य मंत्रालय अपने नियम बनाता है |

निष्कर्ष: कोरोना कातिल नहीं है। 100 के टेस्ट करने पर आज भी 7/8 लोगों में ही कोरोना दिखता है। 100 कोरोना पेशन्ट में से 3/4 की ही मौत होती है।

आज तक भारत की 137 करोड की आबादी में सिर्फ 83,63,242 केसिज़ हैं। यानी 0.6 %, उसमें से 1,24,256 की मौत हुई यानी 1.4 % |

बात सामान्य बुद्धि से भी समझ में आ जायेगी कि, कोरोना से डरने जैसा कुछ भी नहीं है। ये सिर्फ डर का व्यापार है। ये धर्म-संस्कृति-समाज को तहस-नहस करने का एक षड्यंत्र है जिसे रोकने की जिम्मेदारी हम सब की है। (आगे पढ़ने से बात और स्पष्ट होगी)

तो लोग कोरोना को महामारी क्यों कहते है ?

इसका कारण है W. H. O. की व्याख्या | **W. H. O. की व्याख्यानुसार जो नया रोग हो और बड़े पैमाने पर फैलता हो, वह महामारी कहलाता है |**

जिस नई बीमारी से केवल दो दिनों के लिए खुजली आए, लेकीन उसका संक्रमण बड़े पैमाने पर फैलता हो, तो क्या डबल्यू.एच.ओ. उसे महामारी कहेगा ?

हाँ ! उनकी परिभाषा के अनुसार तो कहेगा ही !!! उससे एक भी आदमी की मृत्यु न हुई हो, फिर भी....

वह लोग इबोला, स्वाईन फ्लु आदि को भी महामारी ही मानते है | और किसी भी रोग को नया नाम देकर क्या नई महामारी बनाई (?) नहिं जा सकती है ?

→ ग्लोबल एअर रिपोर्ट 2020 के अनुसार वायु प्रदूषण से भारतमें सालाना 16 लाख मौतें होती है | उसमें 1.16 लाख नवजात शिशुओं का भी समावेश होता है | अगर वायु प्रदूषण को महामारी नहिं कहते है, उसके वजह से देश के सभी उद्योग बन्ध नहिं करवाते है तो कोरोना को क्यों महामारी कहेंगे ?

→ भारत में 5.45 करोड़ हृदयरोग के दर्दी है | विश्वभर की एक तृतीयांश मौत हृदयरोग से होती है | महामारी कहनी हो, तो उसे कहो | आखिर कोरोना ने किया ही क्या है ?

लेकिन कोरोना तो सिर्फ स्पर्श से भी संक्रमित हो जाता है ?

→ W.H.O. ने पहले कहा था कि कोरोना का संक्रमण स्पर्श से होता है | और **अब वह स्वयं ही कह रहा है कि कोरोना स्पर्श से नहीं फैलता है,** सिर्फ ड्रोपलेट, यानी कि छींक-खांसी के बिंदु सामनेवाली व्यक्ति के मुंह, नाक, आँख, कान में जाने से ही फैलता है, है ना गैम !!!

(तो फिर आज भी लोकडाउन और सोश्यल डिस्टन्स का यह ढोंग क्यों ? क्यों हम भगवान की प्रतिमा को छू नहीं सकते ?)

→ और ड्रोपलेट से फैलने वाला यह कोई नया वायरस नहीं है | **कोमन कोल्ड और इन्फ्लुएन्झा जैसे अति सामान्य वायरस भी ड्रोपलेट से फैलते है | कई सदियों से यह रोग होने पर भी कभी किसी देशमें कोमन कोल्ड के डर से मास्क, लोकडाउन, सोश्यल डिस्टेंसिंग का समर्थन-सुझाव किसीने किया क्या ?** यह कोई पागलपन नहीं है, मगर अर्थतंत्र, सामाजिक सम्बन्ध और धर्मश्रद्धा को नष्ट करने की एक सुआयोजित साजिश है | बच्चों एवं युवाओं को डिप्रेशन के शिकार करने की और पोर्न साईट्स के आदी बनाने की **सोची-समझी चाल** है | कैसे ? आगे पढ़ेंगे तो समझा जाएगा |

कोरोना डेथ का 1,24,256 का आंकडा भी धोखाधड़ी है।

→ इटली की आबादी में 23 % लोग 70 साल के उपर के है, जो आज-कल में जानेवालों में से है। (जब कि भारत में सिर्फ 6.3 % ही ऐसे है) वहाँ हर साल इसलिए 50,000 लोग सहज रूप से मरते हैं। कोरोना से मरनेवालों की औसतन उम्र भी 79.5 साल की घोषित हुई हैं। यानी इटली में लाशों के ढ़ेर की जो बातें हो रही है, वे कोरोना से नहीं, मगर वार्षिक मौत के मुताबिक वृद्धावस्था (बूढापा) से ही हो रही है।

→ डॉ. बिश्वरूप रॉय चौधरी ने इटली के स्वास्थ्य मंत्रालय से प्राप्त कि हुई जानकारी अनुसार कोरोना से मरनेवालो में 99 % लोगों को अन्य कैन्सर, हार्ट, B.P. जैसी गंभीर बिमारी पहले से ही थी और उसमें भी 50 % को तो तीन तीन अन्य बिमारी भी थी। यानी उन्हें कोरोना हो तो भी वह जानलेवा नहीं था, मौत कैन्सर एवं बड़ी उम्र के कारण से हुआ था। इटली में कोरोना डेथ का सच्चा फिगर सिर्फ एक प्रतिशत यानी 351 ही हैं।

→ 'वोशिंग्टन टाईम्स' की 28-4-2020 की खबर : U.S.A. में 20 % मौत तो सिर्फ वृद्धाश्रमो में ही हुई है। अठारह वर्ष से नीचे के बच्चों की एक भी मौत नहीं हुइ। सारे के सारे मृत्युप्राप्त मरीज़ो को 1 या 2 जानलेवा बिमारी पहले से ही थी। अमेरीकन मेडिकल एसोसिएशन के मासिक ने अपने सर्वे में बताया था कि 5700 मरीज़ में से 94 % को अन्य बिमारी थी। (अमेरीका का बड़ा आंकडा कैसे हुआ, आपको पता चल गया होगा।)

→ इटली तथा U.S. की तरह भारत में भी 83 % मौत के किस्से कोर्मोबिलिटि वालें यानी अतिरिक्त बिमारीवालें है। यानी भारत में कोरोना से 124256 नहीं, मगर 21124 जितने ही मरे हैं, बाकी लोगों के मौत में जिम्मेदार अन्य बिमारीयाँ थी। उपर बताये गये तीनो देशो में **परिवर्तित किए गए कानून के मुताबिक** (डॉ. बिश्वरुपजी के मुताबिक गत वर्ष के जुलाई महिने में ही जो बदल दिए गए) **कैन्सर इत्यादि के मरीज़ भी यदि कोरोना पोझिटीव आ जाये तो उस की डेथ को कैन्सर डेथ नहीं, कोरोना डेथ ही माना जायेगा, यही तो सबसे बड़ी धोखाधड़ी है।**

→ वर्तमान में पाकिस्तान के N.G.O. ने किए सर्वे के मुताबिक, पाकिस्तान में सिर्फ 3% लोग ही कोरोना को महामारी मान रहे है, बाकी 97 % लोग तो इसे इस्लाम विरोधी षड्यंत्र मान रहे है। वहाँ से बेहिसाब वीडियो वाइरल हो रही है। पाकिस्तान में भय फैलाने में वे लोग निष्फल गये, इसीलिए वहाँ के डोक्टर को एक कोरोना केस डीक्लेर करने के लिए बिल गेट्स की संस्था की ओर से Rs.13000 और वेन्टिलेटर पर चढ़ाके मारने के लिए Rs.39000 की ओफर दी गई है, उसका भी वीडियो जारी हुआ था।

यह 21,124 मौत भी कोरोना से नहीं, विभिन्न दवाईयों के प्रयोग से !

कोरोना की कोई भी प्रकार की दवाई अभी तक एलोपेथी सायन्स खोज नहीं पाया है | (यदि 80 % लोग अपने आप ठीक होते हो, तो दवाई या टीका खोजने की कोई जरुरत है भला ?) तब मल्टीनेशनल फार्मा. कंपनी जेक लगाना चाहती है, यदि उनकी पुरानी दवाई इस

में काम कर गई, तो उन्हें करोड़ो रोगीओं का मार्केट मिल जाये ऐसा है। W. H.O. के साथ साझेदारी करके 100 देशों में उन्होंने सोलिडेटरी ट्रायल शुरु की है | याद रहे कि यह सिर्फ ट्रायल है, उपचार नहीं | स्वजनों को यह कहा नहीं जाता है कि इस दवाई से उनके मरीज़ को कुछ भी हो सकता है | नाहिं, उनकी सम्मति ली जाती है | उल्टा, मीडिया के बल से ऐसा प्रचार किया जाता है कि यह दवाईयाँ संजीवनी औषध है | जिससे लोग सामने से इन दवाईयाँ की डिमांड करने लगे है | यह व्यापार वृद्धि की सिर्फ एक कला है | इन दवाईयाँ में देखिए कौन सी दवाईयाँ है |

(1) हाईड्रोक्सि क्लोरोक्विन : फाल्सीफैरम (जहरी मलेरीया) की दवाई है। वैज्ञानिक रुप से वह कोरोना में काम आ सके ऐसी संभावना ना के बराबर है, क्योंकि वो तो परेसाइट की दवाई है, जब कि कोरोना एक वायरस है। इस के अतिरिक्त, यह दवाई लेने पर दिल की धडकनें रुक जाना और मौत होने तक जैसी प्रतिक्रिया (Reaction) की बातें रिसर्च पेपर में बताई गई है।

श्रीमान् ट्रम्प की केफियत के अनुसार वे नियमित रूप से यह दवाई कोरोना को रोकने के लिए लेते थे | जगजाहिर है कि फिर भी उन्हें कोरोना हुआ | यही इस दवाई की निष्फलता को साबित करता है |

(2) लेपिनेविर + रिटोनेविर : HIV की दवाई है। कोरोना के साथ अणु मात्र भी रिश्ता नहीं है। ICMR की वेबसाईट में पहले स्पष्टता हो चुकी थी कि, इस दवाई से कोई फायदा नहीं है, अपितु नुकशान होता है, मगर बाद में उसी ICMR ने घोषणा कर डाली कि, W.H.O. के कहने से ट्रायल (प्रयोग) कर रहे है।

(3) रेमडेसिविर : दवाई बाजार में आते-आते आफ्रिका में उठा इबोला शांत हो गया। दवाई बिक नहीं रही थी, अतः भारत जैसे देशो में उन्हें मुफ्त में प्रयोग के लिए मनुष्य (मुर्गे) मिल गये हैं। मानव के उपर प्रयोग करने पर उन्हें अत्यधिक रुपये देने पड़ते होते है, मगर यहाँ पर उन्हें मुफ्त में गीनीपीग मिल रहे है। यह दवाई सार्स ओर मार्स वायरस मे भी निष्फल साबित हुई थी। सरकारकी तरफ से सिर्फ इसका प्रायोगिक उपयोग करने की छूटी मिली है, पर किसी दर्दी के स्वजन को इसके भयस्थान बताए जाते नहीं है। लीवर और किडनी पे इससे गंभीर नुकसान होता है।

16 ओक्टोम्बर 2020 को W.H.O. और ICMR, दोनों ने निवेदन किया है कि, उपरोक्त चार दवाईयाँ और इंटरफेरोन, यह सभी कोरोना में बिन-उपयोगी है | उनसे मौत की कमी नहीं हुई है, दर्दीओं का अस्पताल में रहने का समय भी कम नहीं हुआ है, या वेंटिलेटर से जल्दी बहार भी नहीं आ सकते है | अर्थात् उन्होंने इतने महिनों तक ये बिनजरूरी दवाईयाँ

लेकर लोगों को गीनीपीग बनाया गया है...

(4) पेरासिटामोल : वायरस के सामने लड़ने के लिए शरीर के द्वारा सक्रिय की गई रोगप्रतिरोधक क्षमता की ऊर्जा शरीर का तापमान बढ़ाती है, जिससे बुखार आता है | मगर पेरासिटामोल तापमान को कम करने का और रोगप्रतिरोधक क्षमता को दबाने का कार्य करती है, जिससे वायरस को जीवनदान मिल जाता है और वायरस मजबूत होता जाता है। शारीरिक रोगप्रतिरोधक सामर्थ्य तोड़ देने पर क्या होगा ? वह आप समझ सकते हो | ये दवाई सिर्फ बुखार को सर पे चढ़ने से रोकने के लिए उपयुक्त है, वायरस के लिए निष्फल है।

(5) टोसिलिजुमेब : रुमेटोइड आरथराइटिस की दवाई है । पर कोरोना में जीवनसंरक्षक दवाई के रूप में दुष्प्रचारित की जा रही है। इससे सैंकड़ो की मौत भी पिछले सालों में हुई थी। हार्ट-अटैक, सांस मे घुटन जैसे दुष्प्रभाव भी वैज्ञानिकों ने माने है। सामने भोली प्रजा के पास से 40,000 से लेकर 1,00,000 रुपये तक लूटे जाते है । स्वास्थ्य मंत्रालय कहता है कि इससे लाभ कम, नुकसान ज्यादा है।

(6) वेन्टिलेटर से भी बहुत सारी मौतें हुई है, ऐसा अभी-अभी बहार आया है । **अधिकांश कोरोना डेथ अस्पताल में ही क्यों होती है ? घरो में क्यों नहीं ? उसमें भी वेन्टिलेटर पर गया हुआ इन्सान जिंदा क्यों नहीं लौटता हैं ?**

यदि पोस्टमोर्टम हो, तो बहार आयेगा कि ये सारी मौतें कोरोना से नहीं, अपितु दवाई के ज़हर से हुई है। पॉल ना खुल जाये इसलिए पोस्टमॉर्टम पर ही प्रतिबंध लगा दिया !!!

हालाँकि, हाल ही में राजकोट और भोपाल में पोस्टमोर्टम के द्वारा संशोधन किया गया| लेकिन जैसी अपेक्षित थी, वैसी हि रिपोर्ट जाहिर हुई | यह रिपोर्ट सिर्फ और सिर्फ प्रजा में और ज्यादा डर फ़ैलाने के लिए ही जाहिर हुई है | इसमें कोरोना डेथ की जड क्या है, वह तो स्पष्ट हुआ ही नहीं है !

एक और उल्लेखनीय बात यह है कि, जो आदमी कई दिनों से घरमें बुखार-सर्दी का इलाज कर रहा है, जिसे कोई खास परेशानी भी नहीं है, सिर्फ बुखार उतरता नहीं है | यह आदमी सामाजिक दबाव या शरम से आखिरमें अस्पताल जाता है | तभी भी उसे सांस लेने में कोई कठिनाई नहीं है |

प्रश्न यह है की, आखिरकार ऐसा क्या हुआ की अपने पैरो के बल अस्पताल भर्ती होनेवाला यह दर्दी सिर्फ 12 से 48 घंटे में मर गया ??? अगर कोरोना ही कातिल था, तो वह अपने घर में ही क्यों न मर गया ???

ऐसे एक नहीं, अनेकानेक मामले सामने आए है |

आम जनता भी समझ चूकी है और दूसरों को भी चेतवनी देने लगी है कि यह लोग अंगो की तस्करी कर रहे है ! गुर्दे-हार्ड वगैरह निकालकर आदमी को मार देते है !!

एक मुस्लिम नर्स का वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें वह चेतवनी दे रही थी, कि मेरी आंखो के सामने इंजेक्शन देकर छह लोग मार दिये गये है, कृपया अस्पतालमें भर्ती ना हुए |

हालाँकि, यह नहीं माना जा सकता है कि सभी डोक्टर ऐसे गंदे काम करते है | मौत का मुख्य कारण तो **दवाईयों के कारण** ओक्सिजन की कमी होना, ओर्गन फेइल होना और हार्ट ऐरेस्ट होना ही माना जा रहा है | दूसरी और, 99% लोगोमें इस तरह के गंभीर दुष्प्रभाव नहीं दिखते है, इसलिए अच्छे डोक्टर भी इन दवाईयों का विरोध नहीं करते है | मगर 1% पीडितो की मौत को लेकर मीडिया पूरे देशमें **'कोरोना के कहर'** को फैलाती है |

ध्यान दे कि इन दवाईयाँ के मौत के अलावा दूसरें कहीं सारे दुष्प्रभाव बहार आए है | कोरोना से बहार आए 45% मरीज में हृदय, श्वास और फेफडो की तकलीफें दिख रही है, जिसे भी मीडिया कोरोना का कहर ही गीना रही है |

मौत के सच्चे आंकडे बहुत ज्यादा है, मगर सरकार छिपा रही है, वरना अस्पताल और स्मशानगृह क्यों housefull हो रहे है ?

कौन कहता है कि स्मशानगृहें housefull है ? आप आर. टी. आई. से जानकारी ले सकते है कि पूरे भारत में किसी भी शहर में इस साल के किस महीने में कितने डेथ सर्टिफिकेट जारी हुई है | कई शहरों में पिछले साल से 20 से 30% कम डेथ सर्टिफिकेट दिखें, तो हैरान मत होना | कइ लोग इस तरह के शोध कर चूके है |

ध्यान देना : सरकार कम आंकड़े दिखा रही है, ऐसा आक्षेप कर सकते है, परन्तु डेथ सर्टि. तो सभी के इश्यु होगे ही ना ?

वास्तव में, स्मशानगृहों का housefull होना मीडिया द्वारा फैलाया गया एक झूठ है |

→ वूहानमें सुखी पत्तियों की तरह गिरती लाशों को दिखाती हुई एक वीडियो जारी हुई थी, जो कि फेक थी | वहाँ तो आज पार्टी और उत्सव, मास्क या सोश्यल डिस्टन्स के बिना बड़े मजे से हो रहे है | उसकी तस्वीरें भी भारतीय मीडिया में दिखाई जाती है |

→ इटली में हर साल 50000 मोतें स्वाभाविक रूप से होती है और आज वहाँ 35563 मौत ही बताई जा रही है | तो लाशों की ढेर की बातें क्या संभवित है ? इसका भी जारी हुआ वीडियो फेक था |

→ सरकार आंकड़े छूपा रही है, इस आक्षेप के पीछे वास्तव में एक बडा खेल है | केंद्र सरकार के निर्देशानुसार **कई राज्यों में केन्सरादि से मरनेवालों को अगर कोरोना हो,**

तो उसे कोरोना डेथ गीनी जाती है, जो कि खुल्लेआम धोखा है | अगर उस दर्दी को केंसर वगैरह गंभीर बिमारियाँ न होती, तो क्या कोरोना होने के बावजूद वह बच नहीं जाता ?

जबकि गुजरात जैसे कुछ राज्यों में यह भेलसेल नहीं होती है, जिसे सरकार की बेईमानी गिनाई जाती है |

और मान लें कि सरकार सिर्फ 33% आंकडे दिखाती है, तो भी सिरो सर्वेक्षणकी रिपोर्ट तो बताती ही है कि, भारतमें वास्तवमें 45 करोड से भी ज्यादा लोगों के शरीर में कोरोना का प्रवेश हो चूका है | सिर्फ वह कोई तकलीफ नहीं दे रहा है | तो फिर सरकार पे आक्षेप करके भय फ़ैलाने का क्या काम है ? वैसे ही, मृत्यु के आंकडे भी तीन गुने कर दिए जाए, तो भी मृत्युदर 100 में से 1 के बजाय 3 होगा, जो कि स्वाईन फ्लु आदि कई बिमारीयों से कम है |

यानी कि, लोगों में भय को अकबंध रखने की यह सारी आसमानी बातें है | जमीनी हकीकत कुछ और ही है | और इस प्रचार के कारण 'कन्फ्युझन पोलिसी' द्वारा लोगों में भय फ़ैलाने में वे लोग सफल भी हुए है |

→ दूसरी बात, पहले बताया वैसे, अंगतस्करी एवं दवाईयों के घातक दुष्प्रभाव से अगर कृत्रिम मौतें होती है, तो मृत्यु के आंकड़े तो बढ़ेंगे ही ना ? इसमें जिम्मेदार कोरोना नहीं, किंतु एलोपेथी सायन्स और राक्षसी डोक्टर है | और अगर सामान्य सर्दी-झुखामवालों को भी कोरोना में गीनाकर अस्पतालमें कई दिनों तक बीठाया जाए, तो अस्पतालें house full न हो, तो क्या होगा ?

मुंबई में एकदम स्वस्थ फेरीवालों की जबरदस्ती से टेस्टिंग होती है, और 50% से भी ज्यादा किस्से में झूठी रिपोर्ट देनेवाले टेस्ट किट के आधार पर उसे जोर-जबरदस्ती से भी अस्पतालमें भर्ती किया जाता है | वह बिचारा गरीब इन्सान अस्पताल से वापस आया कि नहीं, उसकी फिक्र भी कौन करेगा ?

→ दिल्ली में 2000 की क्षमतावालें कोविड सेन्टर में 1130 बेड खाली थे, फिर भी house full की घोषणा भय फ़ैलाने के लिए की गई | इस घटना से सुप्रीम कोर्ट भी नाराज हुई थी |

→ अब तो कई जिल्ले या शहर के कोविड सेंटर सूमसाम पड़े है, ऐसा खुद मीडियावालें ही बता रहे है | वहाँ के डोक्टर भी इस बात की पुष्टि कर रहे है |

मगर वृद्धो तथा बी. पी.- डायाबिटिस के दर्दीओं के लिए तो कोरोना कातिल ही है ना ?

इस झूठे प्रचार के कारण आज कहि सारें वृद्ध मंदिर भी नहिं जा पाते | उनके संतानों को डर है कि कुछ हो गया तो ? साथ ही व्यापारादि के लिए बहार जाते संतान माता-पिता का संपर्क टालते है, क्योंकि उनके कारण माता-पिता को चेप लग गया तो ? इससे परिवार में सतत तनावभरा माहोल रहता है | महिनों से घर में बन्ध होने से वृद्धजन डिप्रेशन की असर में आ ही गए है |

परन्तु क्या यह प्रचार व्याजबी है ?

यह सत्य है कि जितने लोग मरे है उसमें वृद्ध और बी. पी.-डायाबिटिस जैसे रोगवालें दर्दीओं की संख्या सबसे ज्यादा थी | परन्तु वास्तव में तो अन्य वायरस से भी जो मृत्यु होती है उसमें भी यही स्थिति होती है | इबोला-निपाह-स्वाईन फ्लु जैसे रोगों के वक्त भी यही स्थिति थी, परन्तु तब इस तरह संख्याबद्ध आकलन नहीं होता था | अत: उस वक्त लोग इस तरह नहीं गभराते थे | इस बार रोजबरोज संख्याबद्ध आकलन पेश किया जाता है, परन्तु वैज्ञानिक तथ्यों को दबा भी दिया जाता है |

वास्तव में तो भारत में 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के लोग 8 करोड़ से भी ज्यादा है एवं 8 करोड़ बी. पी. के दर्दी, 7 करोड़ 70 लाख डायाबिटीस के दर्दी, 5 करोड़ 45 लाख हृदय रोग के दर्दी है | अब इस जंगी संख्या के सामने अगर आज 50,000 भी वृद्ध अथवा अन्य बिमारीवालें लोग कोरोना से मरे हो, तो भी वह कुल संख्या के 1% से भी कम ही है | अर्थात्, बाकी के 99% लोग आज 8-8 महिने के बाद भी सुरक्षित है | ऐसा भी नहीं है कि यह 99% लोग बहुत ज्यादा सावधानियाँ रख रहे है इसलिए बच गए | उनमें से कहीं सारे लोग तो झोपडी या चौल में रहने वाले है | कितने ही वृद्ध आज भी नौकरी-धंधे पर जा रहे है |

और तो और 70 वर्ष के वृद्ध भी कोरोना के सामने जित गये ऐसे समाचार भी मीडिया में आते रहते है | अर्थात् बडी उम्रवालें एवं भारी रोगवालों का भी योग्य **इलाज हो**, (आत्मघाती ट्रायल पर चल रही दवाईयाँ नहीं) तो भय का कोई कारण नहीं है |

अगर कोरोना कातिल नहीं है, तो एकदम निरोगी एसे युवान क्यों मर रहे है ?

युवाओं की मृत्यु के किस्से में भी ज्यादातर युवाओं हार्ट, बी. पी. वगैरह अन्य रोगवालें ही होते है | जिसका खुलासा नहीं होता है | बाकी के थोड़े कुछ जो एकदम निरोगी है

उनकी मृत्यु में पहले कहा था, वैसे 1) दवाईओं का कातिल दुष्प्रभाव और 2) अंगतस्करी का कौभांड मुख्यरूप से जवाबदार है | और एक बात भूलने जैसी नहीं है कि 2019 की सालमें भी यदि सामान्य फ्लु से पुरे देश में कुल 1,26,655 लोग मरे थे और उसमें भी बालक से लेकर वृद्ध तक सभी का समावेश होता हो, तो कोरोना नाम के सामान्य वायरस से कोई युवान मर जाए तो यह कोई नई या बड़ी घटना नहीं है |

तो फिर डोक्टरों के इतने मौत क्यों होते है ?

१) **सरकार की ओर से कोरोना वोरियर्स के रूपमें सद्गत होते हरेक डोक्टर को रु. 50 लाख देने की घोषणा हुई है** | अत: अन्य कारण से मरते डोक्टरें भी कोरोनाग्रस्त घोषित किए जाते है |

२) जो ट्रिटमेंट सामान्य दर्दीओं को दी जाती है, वहीं ट्रीटमेन्ट डोक्टरों को भी दी जाती है | उनके भी सामान्य दर्दीओं की तरह दवाईयाँ के दुष्प्रभाव से मौतें होती है | फर्क इतना है कि, मीडिया उसका जोरदार प्रचार करके भय फैला रही है |

कोरोना किसे काँटता है ? जो डरता है उसे...

अहमदाबाद-सीविल होस्पिटल के एक डोक्टर के साथ बात हुई | वह लगभग ढ़ाई महीनों से सिर्फ क्रिटिकल कोरोना दर्दीओंकी ही सारवार में लगे थे | उनको पूछा गया कि जितनी मौतें हुई उसमें मुख्य कारण क्या है ? **जवाब मिला-60 से 70% सिर्फ और सिर्फ भय...**

लोग ऐसा मान लेते है कि अब तो वे मरने ही वालें है | यह नकारात्मकता ही उन्हें मार डालती है | उनके मतानुसार अगर यह लोग कोरोना को सामान्य दर्द गिने, तो निश्चित्त रूप में वे ठीक हो ही सकते है | और मुख्य रूप से काउन्सिलिंग द्वारा ही उन्होंने बहोत सारे बिन आशास्पद केसिंस को सुधारें भी है |

भूतकाल के प्रत्येक नामी-अनामी वायरस वृद्धों तथा भारी रोगवालों को निशान बनाते ही थे | क्योंकि उनका शरीर शिथिल हो चूका होता है | परन्तु मनोबल के आधार पर वह बच जाते थे | जो मर जाते थे, उनकी जानकारी संख्या के साथ हमे देने में नहीं आती थी | **इस बार डराकर उनके मनोबल को तोड दिया जा रहा है | लोग जब सेनेटाईझर वगैरह सावधानियाँ लेते है, तब भी वास्तवमें तो मनमें भय को ही पोषते है** | अत: उन लोगों को कोरोना ज्यादा लगता है | हालाँकि, कोरोना इतना नाजुक वायरस है कि तन-मनसे ढीलें लोगों में से भी फक्त इतने ही लोगों का भोग ले सका है |

सारांश इतना ही है कि निश्चिंत एवं निर्भय बनकर रहो | **आप का मनोबल ही**

कोरोना को हरा देगा | वही सच्ची वैक्सीन है | आपको पता भी नहीं चलेगा कि कब कोरोना आपके शरीर में घुसा और आपने उसे हराया | और शायद भुखार या श्वासकी तकलीफ हो, तो भी डो. बिश्वरूप रॉय चौधरी के 3 दिनके डायट(फलाहार) से आप ठीक हो ही सकते है | आज तक में उन्होंने 50,000 लोगों को ठीक किया है, उसमें से कई लोग अन्य डोक्टरों के मुताबिक़ सिर्फ 2-4 घंटो के ही मेहमान थे, वृद्ध भी थे, बी. पी.-डायाबिटिस वालें भी थे, परन्तु आज तक उनकी देखरेख में एक भी केस फेल नहीं हुआ | वह भी एक भी दवाई बिना, एक भी पैसे के खर्च बिना | वैसे ही, अनेक साधारण आयुर्वेदिक उपचार से भी हज़ारों दर्दी स्वस्थ हुए है |

प्रतिदिन इतने कैसिज क्यों बढ़ रहे है ?

वायरस का स्वभाव ही फैलने का है, उसे कोई रोक नहीं सकता | लोकडाउन में भी इतने सारे केस बढ़े ही थे ना ? ऐसे तो अनेकानेक वायरस अपने शरीर में आज भी उपस्थित है, मगर हमारी प्रतिरोधक क्षमता से वे हार जाते है और हमें पता तक नहीं चलता है | **विज्ञान के मुताबिक़ कोई भी वायरस किसी भी प्रदेश की 60/70 प्रतिशत आबादी में फैलने में कामियाब रहता है | अत: भारत में 100 करोड़ लोगों में भी संक्रमण फैल गया हो तो भी क्या हुआ ? कोई मरता तो नहीं है ना ?**

और दूसरी बात-केस की तादाद बढ़ानी या कम करनी सरकार के हाथ में है | 100 का टेस्ट करने पर 4 को पोजिटिव आएगा | 20 लाख के टेस्टिंग पर 80000 पोजिटिव... जैसे जैसे टेस्ट बढ़ेगा, वैसे केस के आंकड़े बढ़ते रहेंगे | मजे की बात यह है कि, W. H. O., मीडिया, विपक्ष, सुप्रीम कोर्ट, सब कोई एक सूर से चीख रहे है कि, टेस्टिंग बढाओ...टेस्टिंग बढ़ाओ | क्यों भाई ? जनता को खोफ में रखने के लिए..? अरे ! मीडिया को नियंत्रित करें, आंकड़े छापने का बंद करें, सब कुछ नोर्मल हो जाएगा, वो भी अपने आप...

सितम्बर माह के अंत तक W.H.O. की ओर से I.C.M.R. को कोरोनामुक्ति(?) के लिए फंड मीलता था | उससे प्रतिदिन टेस्टिंग बढ़ाये जाते थे | ओक्टुम्बर माह की शुरुआत से ही केस कम हो गए | **कोरोना का आंकडा और भय-दोनों बरकरार रखने के लिए रोकफेलर फाउन्डेशन की ओर से भारत को टेस्टिंग बढाने के हेतु से 55 लाख डोलर दीए गए है |** जिसका उपयोग नवम्बर-दिसम्बर में किया जाएगा | ठंडी की ऋतुमें होते सामान्य है | सर्दी-बुखार को कोरोना में गिनाये जाऐंगे, जिसे मीडिया कोरोना की दूसरी लहर गिनाऐगी |

ICMR के सिरो सर्वे ने किया कोरोना का पर्दाफाश....

ICMR ने एन्टिजन टेस्ट द्वारा बड़े-बड़े शहरों में कितने प्रतिशत लोगों को वास्तव में कोरोना होगा, यह जानने के लिए सर्वे किया था | एवं ऐसे सर्वे हर महिनें-देढ़ महिने में UPDATE भी करते रहने की उनकी गिनती है |

सर्वे का परिणाम निम्नानुसार है :

अहमदाबाद-	50%	सुरत-	18% से अंदर
गांधीनगर-	48.99%	जयपुर-	
मुंबई-	36.56%	इंदौर-	
मुंबई के स्लम एरिया-	58%	चेन्नाई-	
न्यु दिल्ही-	23.48%	हैदराबाद-	
आग्रा-	22.80%	जोधपुर-	

(नोंध : यह संख्या उस शहर के कन्टेन्मेन्ट झोन में किए हुए सर्वे की है)

इसका मतलब समझे ?

इसका मतलब यह है कि इस समय देश की इतनी विराट आबादी के शरीरमें कोरोना है ही | तो क्या वह सब मर गए ? नहिं... तो क्या वह सब अस्पताल की ओर दोड़ गए ? नहिं....क्या वह सब क्वोरन्टाइन हुए ? नहिं... | उन्हें तो बुखार जैसे कोई लक्षण ही नहीं है वे तो मजे से खा-पीकर घूम-फिर रहे है |

पहले कहा था, वैसे वायरस तो देशके कोने-कोने तक फैलनेवाला ही है | क्योंकि फैलना ही उसका स्वभाव है | परन्तु इन्सान की रोगप्रतिकारक शक्ति उसे बिन असरकारक बना देती है और हमे पता तक नहीं चलता हैं | इसी को बिना लक्षणवालें केस कहा जाता है | और यह नियम अन्य असंख्य वायरस के लिए भी लागू पड़ता है, लागू पडा था और लागू पड़ता रहेगा...

हैद्राबाद IIT के प्रोफेसर विद्यासागर की अध्यक्षतामें सरकार द्वारा बनाई समितिने National super model for covid-19 progression के रिपोर्ट अनुसार **भारत में कुल 30 करोड़ लोगों को कोरोना हो चूका है ! जिसमें शायद आपका भी नंबर हो सकता है | और अगर 27% लोगों के सामने 1,24,256 लोग कोरोना से मरे है तो डेथ रेट मात्र 0.414 ही हुई |**

वर्तमान में जो आंकड़े दिए जाते है, वह तो सिर्फ जिन लोगों के टेस्ट हुए है उनके ही है| डेथ रेट गिर न जाए इसलिए वास्तविकता को प्रगट नहीं की आती है | अमेरिकी रिसर्च के

अनुसार न्यू योर्क में 21% से ज्यादा लोगों में कोरोना फैल चूका है | वहां के अन्य शहरो में भी यही स्थिति है | वहाँ की डेथ रेट 1000 में से सिर्फ 18 ही है |

कोरोना की टेस्ट किट ही भरोसेमंद नहीं हैं |

→ ये RTPCR किट 1984 में 'कैरी मुलिस'ने बनाई थी | तभी उसने कहा था कि यह टेस्ट किट रिसर्च के लिए ही है, निदान के लिए नहीं | इसीलिए आज भी इस किट पर लिखा हुआ मिलता है कि, **संशोधन के लिए ही उपयोग में लिया जाये** |

→ चाइना एकेडेमी ऑफ मेडिकल सायन्स के प्रमुख वांग चेन का कहना है कि-**ये किट सिर्फ 30-50 % ही सही परिणाम दे पाते हैं,** और इसीलिए एक ही व्यक्ति में मुँह और नाक के रिपोर्ट अलग-अलग आ रहे हैं, एक पोझिटिव एक नेगेटिव !!!

→ शुद्धि परिवार के आचार्य मनीषजी ने प्रयोग किया था | इस टेस्ट किट की नलीमें उँटनी का दूध एवं पपीते के पान का रस सेम्पल के रूप में डाले गए | दोनों बार रिपोर्ट पोझिटिव !!

→ राजस्थान की हाईकोर्ट के जस्टिस के तीन दिन में 6 बार टेस्ट हुए | 3 पोझिटिव, 3 नेगेटिव !

इस लिंकमें उपलब्ध आर्टिकलमें जर्मनी के 500 डोक्टरोने, प्रूफ के साथ दावा किया है, कि कोरोना सिर्फ और सिर्फ एक साज़िश है |

https://bit.ly/3enliDn

विश्व के अनेकानेक प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा तज्ज्ञों की साक्षी लेकर 87 दिन में 'जर्मन कोरोना इन्वेस्टिगेशन कमिटि' ने जो रिपोर्ट तैयार किया है वह कहता है कि कोरोना सिर्फ एक षड्यंत्र है |

https://bit.ly/3jREQRM

वर्ल्ड डोक्टर एलायन्स के प्रमुख डो. मिव्लिट यर्टसेवन कहते है कि, कोरोना का महामारी होने में तबीबी विज्ञान से समर्थित कोई सबूत नहीं है |

https://bit.ly/2Iai36d

लॉकडाउन से केस की संख्या अंकुश में रही ना ?

बिल्कुल गलत ! लॉकडाउन के वक्त जितनी मृत्युदर थी, उतनी ही आज भी लॉकडाउन खुलने के बाद भी है और केस की वृद्धि तो पहले बताया, उस हिसाब से सरकार के हाथ में है।

(1) जापान चाइना के नजदीक होने पर भी, भारत जैसी घनी आबादी के बावजूद, इटली से डबल आबादी होने पर भी, लॉकडाउन नहीं किया था और मौतें इटली से भी बहुत कम (25 % भी नहीं) ऐसा ही देश है विएटनाम-जहाँ लॉकडाउन ना करने पर भी शून्य मौत है, ऐसे अनेक देश है।

(2) जहाँ कोरोना पैदा हुआ (या किया गया ?) उस वुहान में सिर्फ 7 दिन का ही लॉकडाउन था | सामने पुरा चाईना खुला था।

(3) अपने यहाँ जब लॉकडाउन घोषित हुआ, तब 739 में से 600 जिले में एक भी केस नहीं था, तो सिर्फ 139 जिले को ही सील करना ना चाहिए था ? ऐसी कोमनसेन्स (सामान्यबुद्धि) तो कोई भी आमआदमी में होती है। सरकार पर संपूर्ण भारत को लॉकडाउन में झोंकने का दबाव किसका होगा ??? 139 जिले में भी आवश्यक सेवा के नाम से 40% जितनी आवाजाही चालु ही थी, इससे संक्रमण सर्वत्र फैला ! वास्तवमें, लोकडाउन कोरोना को रोकने के लिए नहीं, किन्तु एक नई सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था (या कुव्यवस्था) खड़ी करने के लिए किया गया था | (आगे पढ़िए सब समझा जाएगा)

(4) U.S. के 50 में से 20 राज्यो में लॉकडाउन का सख्त विरोध हुआ था। और हो भी रहा है |

(लॉकडाउन से पहले ट्रम्प के शब्द थे, 'रोग से ज्यादा नुकशानकारी रोग की चिकित्सा नहीं होनी चाहिए !' ट्रम्प षड्यंत्रकारियों के आधीन नहीं होना चाहता था, मगर मीडिया के दुष्प्रचार से उस के सामने प्रजा का गुस्सा फूट पड़ा। आखिर मजबूरन उसे लॉकडाउन करना पड़ा। षड्यंत्रकारियों के प्रति असमर्पित रहने की सजा के रुप में आनेवाले चुनाव में उसे पछाड़ने (हराने) के लिए ही US और यूरोप में Black & White का राष्ट्रव्यापी आंदोलन चला। US के भूतपूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारने इसीलिए ट्रम्प की पोल खोलती कीताब प्रकाशित की है। पालतु कुत्ते जैसी देश-विदेश की मीडिया भी इसलिए उसे बदनाम कर रही है | जो नेता समर्पित न रहे, उसे ऐसी सजा भुगतनी पड़ेगी |

(5) इम्पिरियल कोलेज, बिट्रेन का वैज्ञानिक फर्ग्युसन, जिसने यह लॉकडाउन की थ्यौरी प्रस्तुत की | (और WHO ने किसी भी विशेषज्ञ से विचार-विमर्श किए बिना ही समग्र विश्व पर थोप दी) वो खुद ही जब लॉकडाउन के दौरान अपनी गर्लफ्रेन्ड के साथ बाईक पर घूमता हुआ पकड़ा गया, तब ब्रिटेन-U.S. की जनता समझने लगी कि दाल में कुछ काला हैं। ट्रम्प कभी भी मास्क पहने हुए दिखे नहीं है | कोरोना से स्वस्थ होकर जब वे वापिश व्हाईट हाऊस लौटे, तब उन्होंने मास्क निकालकर फैका, और कहा कि, **'कोरोना से डरने जैसा कुछ नहीं है |"**

(6) 23-3-20 के भारत के D.G.C.A. (विमानी सेवा नियामक) ने सूचनापत्र जारी किया था | जिसमें बताया गया था कि, लॉकडाउन में विदेश में फँसे भारतीयों को वापिस लाने 'वंदे भारत मिशन' में या अन्य कोई भी विमानी सेवा के दौरान बीचवाली सीट खाली छोड़ देनी है, जिससे सोशल डिस्टेंसिंग का पालन हो। मगर, प्रत्येक सीट में यात्री को बिठाये जाने पर पायलोट देवेन कानानी ने हाईकोर्ट में P.I.L. दर्ज की, जिसके चलते हाईकोर्ट ने एयरलाईन्स को बीचवाली सीट कैन्सिल करने का आदेश दिया।

सरकार संचालित एयरलाइन्स के सरकारी वकिल ने सुप्रीम कोर्ट में जाकर दलील की कि, इससे सरकार को आर्थिक नुकशानी होगी और अब सीट कैन्सिल होने पर एक परिवार के ही कुछ सदस्य पीछे रह जायेंगे इत्यादि... मगर सोचने की बात है कि लोकडाउन करने से हो रही प्रजा की आर्थिक नुकशानी की फिक्र नहीं है ? सुप्रीमकोर्ट ने नई टिकटो में (यानि 6 जुन से) बीचवाली सीट खाली रखने को कहा तो प्रत्युत्तर में, सरकारी वकील ने कहा, 'बीचवाली सीट खाली रखने की कोई जरुरत नहीं है |' ऐसा नया सर्क्युलर आ रहा है और 21-5-2020 को ऐसी नियमावलि आ भी गई। (केस नं. LD-VC-3-2020) **यानी सरकार ऐसा ही मानती है कि सोश्यल डिस्टेंस या लोकडाउन जरुरी नहीं है, फिर भी आज भी सामान्य प्रजा के जीवन में यह हस्तक्षेप जारी है !**

(विमान और श्रमिक स्पेशल ट्रेन में सोश्यल डिस्टेंस ना हो तो भी कोरोना काँटने नहीं आता है मगर मंदिर में आ जाता है ???)

वास्तव में, लोकडाउन के नाम पर हमारी व्यक्तिगत, सामाजिक और धार्मिक स्वतंत्रता का खुल्लेआम हनन हुआ है।

→ अनेक लोगों के द्वारा शाकमार्केट में सब्जी छूने के बावजूद संक्रमण नहीं होता है, अखबार वितरित करने में नहीं होता, मगर भगवान की प्रतिमा छूने में कोरोना लगता है, वाह... !!

→ शराब की दुकान में सोशल डिस्टेन्स के साथ खड़े रह सकते है, मगर मंदिर में इस तरह दर्शन की अनुमति भी नहीं !! (आज भी कई राज्यो में)

→ आरोग्यसेतू एप्प हो तो ही मंदिर में जाने का ? तो जिसके पास स्मार्टफोन, एन्ड्रोइड मोबाईल नहीं, उसे ?

→ कल कहेंगे कि रोज प्रभुमूर्ति को भी सैनिटाइज करें तो हमें वो भी करने का ?

→ महाराष्ट्र सरकार के पास मंदिरों की संपत्ति में से मनचाही राशि लेकर अर्थतंत्र पटरी पर चढ़ाने की सिफारिश कोरोना काल के दौरान आ चुकी थी, कल केन्द्र सरकार ऐसा कहने लगेगी तो ?

→ आंध्र सरकार ने तिरुपति मंदिर की 23 संपत्ति निलाम करने का निर्णय कर लिया था, जो कुछ जागृत लोगों के कारण रद्द करना पडा।

→ कोंग्रेस नेता पृथ्वीराज कह रहा है, मंदिर का सोना उठा लो ! (उनके परमपूज्य पिताजी का होगा ??)

भारत पूर्व में गोरे लोगों का गुलाम था, आज देशी अंग्रेजो का गुलाम बन रहा है (या बन चुका है) | एक बात याद रखने जैसी है कि सरकार कोई भी कारण उपस्थित होने पर जो कानुन बनाती है वो कानुन कारण समाप्त होने के बाद भी चलता रहता है। जैसे कि अंग्रेजो ने बनाया हुआ और आज भी चल रहा 'महामारी अधिनियम' (पेन्डेमिक एक्ट), जिसके नाम पर आज हमारी सारी स्वतंत्रता, हमारे सारे अधिकार छीने जा चुके हैं। और **आज नहिं बोलोगे, तो यह नियंत्रण कायम हो जाएगा, और एक बार स्वतंत्रता गुमाने के बाद उसे वापिस पाने के लिए कुछ न कुछ बलिदान देने ही पडेंगे, वो भी छोटे बलिदान नहीं, बड़े....।**

लॉकडाउन के चलते खासतौर पर बच्चे एवं कच्ची उम्र के किशोर-युवा अकेलापन के शिकार बनकर डिप्रेशन के रोगी बने | साथ में बहुत सारे युवा फालतु बैठे होने के कारण अकल्पनीय प्रमाण में अश्लील पिक्चर्स के आदी बन गये। उसका मुआवजा कौन देगा ? और अब ऑनलाइन स्कुल के द्वारा उन्हें पर्सनल मोबाईल लेने के लिए मजबूर किया जा रहा है | जिसका लक्ष्य क्या युवाधन को पतन के मार्ग पर ले जाना है ?

अभी भी मौका है, स्कुल-मंदिर इत्यादि सब कुछ पूर्ववत् खोलकर लोकडाउन पूरा का पूरा उठा लिया जाये |

किसी भी वायरस को नियंत्रित करने के लिए लॉकडाउन नहीं, हर्ड इम्युनिटि चाहिए

जो वायरस बहुत बड़ी संख्या में रहे लोगों में फैल गया हो और उन लोगों ने उस वायरस को हरा दिया हो, तो उसके इर्द-गिर्द बसे अन्य लोगों में भी अपने आप उस वायरस के सामने लड़ने की क्षमता आ जाती है। इस वैज्ञानिक थ्यौरी को 'हर्ड इम्युनिटि' के नाम से जाना जाता हैं।

→ इज़रायेल-जापान जैसे राष्ट्रो में इसी थ्यौरी के आधार पर लोकडाउन नहि किया गया था।

→ ब्रिटेन भी इसी थ्यौरी पर पहले चला मगर बाद में डर के मारे अस्पतलों में लोगों की भीड़ बढ़ते लोकडाउन किया गया।

→ भारत सहित अनेक देश पूर्व में भी स्वाईन फ्लु, बर्ड फ्लु, डेंग्यु, चीकनगुनिया जैसे रोगों के सामने इसी थ्यौरी के आधार पर लड़े भी थे, जीते भी थे।

→ डॉ.जयप्रकाश (भारत के शीर्ष महामारी विशेषज्ञ) भी इसी थ्यौरी की पुष्टि में तर्क दे रहे है, समर्थन कर रहे हैं।

→ षड्यंत्रकारियों ने लोगों को घरों में बंद करवाकर, एक दूसरों से दूर करके हर्ड इम्युनिटि खड़ी होने से रोक दिया, जिससे कोरोना का टीका खोजा जाये और टीकावितरण ना हो, तब तक रोग प्रभावशाली एवं सक्रिय बना रहा। ऊपर से घरमें रहने से सूर्यप्रकाश से मीलता विटामिन 'डी' कम हो जाने से रोग प्रतिरोधकशक्ति तूटने लगेगी...well planned !!!

→ ICMR के मुताबिक भारत में 35 करोड़ से ज्यादा लोग संक्रमणग्रस्त हो चुके है। मगर उन्हें लक्षण नहीं है यानी भारत में हर्ड इम्युनिटि शुरु हो गई है। वायरस शरीर में आया मगर निष्फल हो गया, **बिना लक्षण के कैस माने हर्ड इम्युनिटि पा चूके कैस | बिना लक्षणवालें कैस जोखमी नहीं है, खुशी की बात है !**

→ रोकफेलर युनि. U.S.A. में 20 साल तक अध्ययन करनेवालें Dr. नट विट्टकोवस्की कह रहे है कि हर्ड इम्युनिटि से 4/5 सप्ताह में ही वायरस खत्म हो जाता हैं। घर में बैठे रहने से वायरस की ताकत बढ़ जाती हैं।

भारत में तो वैसे भी गंदगी, मच्छर, मिट्टी में बचपन के बीतने से सहजरुप में रोग प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा होती है। जिन देशों में स्वच्छता का अति आग्रह (प्रतिबद्धता) था, वहीं पर कोरोना की ज्यादा असर हुई है, ऐसा सर्वे बोल रहा है। भारत को लोकडाउन की कोई जरुरत नहीं है। ग्राम्य संस्कृति की वैज्ञानिकता से ही हम कोरोना के सामने लड़ लेंगे...

मास्क की मायाजाल

→ कोरोना वायरस का कद 100 nm है और मास्क के छिद्रों का कद 300-800 nm होता है | **अत: मास्क वायरस को अंदर आते या बहार जाते रोकने में नाकाम है |**

→ खुल्ली हवा में वायरस जल्दी मर जाता है, जबकी मास्कमें छिपका हुआ वायरस जीवनदान पाकर दर्दी को मृत्युदान करता है |

→ मास्क के कारण लोग पर्याप्त मात्रामें ऑक्सीजन नहीं ले सकते है, जिसका ख्याल ओक्सिमीटर से पाया जा सकता है | इसके सामने बहार निकाला हुआ कार्बन डायोक्साईड मास्क के कारण पुन: मुंह में ही जाता है | अत: **मास्क से लंबे समय बाद फैफडें बहुत ही कमज़ोर हो जाएँगे और फिर तो कोरोना जैसे श्वसनतंत्र के सामान्य रोग भी घातक साबित हो जाएँगे** | और यह दुष्प्रभाव सबसे पहले वृद्धों एवं हृदयरोगीओं में दिखेगा |

→ ऑक्सीजन न मिलने पर ज्ञानतंतु कमजोर होते है | विचारशक्ति-यादशक्ति क्षीण होती है | बुद्धिशक्ति कमज़ोर होने पर प्रतिभा का नाश होगा | सत्त्व-खुमारी वगैरह का सफाया हो जाएगा |

→ भिखारी मास्क नहीं पहनते है, आजतक में कितने भिखारी मर गए ? क्या उसका रेकोर्ड कोई देगा ?

→ अबजो रूपए लुँटाने के बाद अब W.H.O. कह रहा है कि N-95 मास्क कार्यक्षम नहीं है | तो भाई ! अब कौन सी कंपनीको मलाई चटानी है ?

→ मास्क पहनने से कोई फायदा नहीं है और नहीं पहनने से कोई नुकसान नहीं है, अरे ! मास्क पहनने से ही भयंकर नुकसान हो सकता है, तो फिर 1000/- से लगाकर 1 लाख रु. तक का दंड क्यों ?

→ क्यों गरीब प्रजाको परिवार के लिए मास्क खरीदने के पीछे इतना खर्च करना ? क्यों पोलिस बलात्कारियों, खुनीओं, चोरों को छोड़कर मास्क नहीं पहनने वालें निर्दोष नागरिकों के पीछे पडी है ???

→ ट्रम्प के सायन्टिफिक एडवाईजर स्कोट एटलास का कहना है कि, मास्क सर्वथा बिनउपयोगी है |

→ **भारतीय स्वास्थ्य मंत्रालयकी साईट की गाइडलाइंस ऐसा कहती है कि स्वस्थ इन्सान को मास्क पहनने से फायदा हो इसका कोई वैज्ञानिक आधार मिलता**

नहीं है | किंतु नुकसान होने की शक्यता ज्यादा है | अत: स्वस्थ इन्सान मास्क पहनकर मास्क का दुरूपयोग ना करें | क्योंकि मास्क की बहुत कमी है |

शंकास्पद सोश्यल डिस्टन्स

→ W.H.O. के कथनानुसार अगर कोरोना स्पर्श से नहीं फैलता है ? तो सोश्यल डिस्टन्स क्यों ? इकट्ठे हुए लोगों की पिटाई क्यों ? स्कूल-मंदिर क्यों बन्ध ? उत्सव-तहेवार क्यों बन्ध ? विवाह प्रसंग में संख्याका नियंत्रण क्यों ?

→ सोश्यल डिस्टन्स जरूरी नहीं है इसलिए राजकीय पक्षों के प्रसंग में सोश्यल डिस्टन्स नहीं होता |

→ अस्पताल एवं सरकारी कर्मचारीओं में क्यों सोश्यल डिस्टन्स नहीं है ?

→ ट्रेन एवं विमानों की हरेक सीट क्यों भर देते है ?

→ धारावी की झोपडपट्टी में सोश्यल डिस्टन्स संभव ही नहीं है, तो क्या आधी धारावी कब्रस्तान में पलट गई है ? क्यों पुरी धारावी के 6 लाख लोगों को कोरोना नहीं हुआ ?

वास्तव में तो यह सोश्यल डिस्टन्स तो हर्ड इम्युनिटि को रोकने का एक उपाय है | लोग एक दुसरे से दूर रहेंगे तो इम्युनिटि नहीं बनने से एक-एक बच्चा कोरोना का शिकार बनेगा | ज्यादा जे ज्यादा लोग मरे इस हेतु यह एक वैज्ञानिक साज़िश है |

याद रहे : **लोग कोरोना से नहीं, परन्तु कोरोना का नाश करने हेतु (!) जारी किए गए नियंत्रण एवं सजा से डर रहे है |**

फिर भी लोगों में इतना डर क्यों ?

इसके दो कारण है, (1) W.H.O. (विश्व स्वास्थ्य संगठन) : चाईना के वुहान शहर में कोरोना वायरस फैल चुका हैं, उसकी पहली बार अधिकृत जानकारी इस संस्था के द्वारा मिली थी। उन्होंने ही भविष्यवाणी की थी कि इस कोरोना से विश्व में करोड़ो लोगों की जान जाएगी। उन्होंने ही (दुनिया के तकरीबन तमाम) सरकारों को कोरोना से बचने के लिए लोकडाउन करने की सलाह दी थी। उन्होंने ही कोरोनाग्रस्त दर्दीओं को आइसोलेशन में डालने की सलाह दी थी। उन्होंने ही लोगों को कोरोना से बचने के लिए मास्क एवं सैनेटाईजर की सलाह दी थी। इस W.H.O. को P.A.C.E. (पार्लामेन्टरी एसेम्बली ऑफ काउन्सील ऑफ यूरोप) ने लूंटारु घोषित की थी।

भय का दूसरा कारण (2) मीडिया ! सारी की सारी न्यूज़ चैनल एवं अखबार चीख-चीख कर कोरोना से बचने की बातें कर रहे हैं। देश की यह सारी मीडिया, U.N.I., P.T.I. और A.N.I. नामक नेशनल न्यूज़ एजेन्सीज़ के हाथ नीचे कार्य कर रही है। हादसे जैसे 80 % चालु प्रादेशिक समाचारों को छोड़कर बाकी 20% राष्ट्रीय एवं आंतरराष्ट्रीय समाचार इसी एजेन्सीज़ में से छान कर आते है | प्रादेशिक न्यू एजेन्सीज दुनियाभर के समाचार संकलित नहीं कर सकती है, अत: उन्हें माहिती देने के लिए यह एजन्सीज सहाय करती है | मगर यह सहाय सिर्फ कुछ उद्योगपति और राजनेताओं के ईशारे पे और उनके हित में दी जाती है | और ये एजेन्सीज़ खुद भी रोईटर, A.P., A.F.P., Blumberg, C.N.N. जैसी आंतरराष्ट्रीय न्यूज़ एजेन्सीज़ के हाथ नीचे होती है।

आपको जानकार अचरज होगा कि, समग्र भारत में 75% (यानी 105 करोड) लोगों को समाचार पहुंचाने वाली कुछ गीनी-चूनी मीडिया कुल मिलाकर सिर्फ 39 कंपनीयाँ एवं 45 व्यक्तिओं के हाथमें है !!! आंतरराष्ट्रीय न्युज़ एजन्सीज़ पर तो सिर्फ 5-7 व्यक्तिओं का ही कंट्रोल है !!! इनके तरफसे ड्राफ्ट होकर आते समाचार को ही आप सत्य मानते हो, मगर यह लोग तो सिर्फ निजी स्वार्थ के अनुसार ही समाचार ड्राफ्ट करते है !

अब जानिये कि यह मीडिया आपके साथ कैसा खेल खेलती है...

मीडिया की महामारी

मीडिया एक एसा साधन है कि जो लोगों के विचारों को आकर दे सकती है |

शिक्षण अनिवार्य है, नात-जात के बंधन वगैरह सब अन्धकार युग की बातें है, धर्म सिर्फ निजी श्रद्धा का विषय है...कोई वास्तविकता नहीं है, विज्ञान ही सर्वोपरि सत्य है, एलोपेथी हि श्रेष्ठ है वगैरह-वगैरह सेंकडो विचारों लोगों के मनमें ठस गए है | उसका मुख्य कारण बना है मीडिया...

'सो बार बोला हुआ झूठ भी सच्च बन जाता है' यह सिद्धांत मीडिया कंपनीओं का प्राणसूत्र है | समाज और व्यक्ति के लिए आत्मघाती ऐसी आधार बिना की बातें भी गला फाड़फाड़ कर बार-बार बोलते रहते है और धीरे-धीरे लोगों का मन बदल जाता है |

वास्तव में तो ये लोग प्रजा की भावनाएँ के साथ फूटबोल के गेंद के जैसे खेलते रहते है, वो लोग चीन के प्रति आक्रोश पैदा करवा सकते है, कोई एकाद व्यक्ति या पक्ष की ओर अंधी भक्ति खड़ी कर सकते है, किसीके प्रति तिरस्कार उत्पन्न करवा सकते है, धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक नीतिओं में बदलाव ला सकते है और कोरोना जैसे फ़ालतू वायरस को महामारी में भी गीना सकते है, उनको सिर्फ इतना ही करना है की बार-बार गला-फाड़फाड़ कर लोगों की संवेदनाएँ को उछालना है |

फिल्ममें प्रस्तुत होते विचार सिर्फ लोगों के सुषुप्त मन पर हि असर करते है | क्योंकि लोग समझते है कि यह सिर्फ काल्पनिक कथा है, परंतु मीडिया में बोलने वालों और लिखने वालों को महान विचारक गीनाये जाते है, लोग पहली बार नहीं, तो सो बारमें तो उनकी बात मान ही लेते है |

कोरोना के परिप्रेक्ष्य में सोचे तो, लोगों में भय का फैलावा भी मीडिया ने हि किया है...मास्क वगैरह नियम नहीं पालने वालें को राष्ट्रद्रोही गीनाने का काम भी मीडिया ने हि किया है, तबलघी को बदनाम करके सभी संतो-धार्मिक अग्रणीओं पर सभी नीति-नियमों का पालन करने का दबाव बनाया, ओनलाइन शिक्षण और वर्क फ्रोम होम को हि श्रेष्ठ और समजदारी भरा गिनाया, **संक्षेप में कहे तो, जो चल रहा है उसको स्वीकारने के लिए मीडिया लोगों को सीखाती है, और लोग सीख भी जाते है** | और याद रहे, पहले कहा वैसे मीडिया कुछ उद्योगपतिओं के हाथ का खिलौना है |

षड्यंत्र का पर्दाफाश हो रहा है

ऐसा प्रचार भी है और आम जनता की सोच भी है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) विश्व के लोगों के आरोग्यहित में कार्य कर रहा है। बच्चों को अपने विद्यालय में भी ये ही सिखाया जाता है। मगर, यह संस्था किस के दान पर चल रही है, जानते हों ?

सर्वाधिक दान अमेरीकी सरकार का 28 % और उसके बाद 22.5 % का दान बिल गेट्स अकेला देता है। जिसका दान मिलता हो, वर्चस्व उन्हीं का होगा, यह एक स्वाभाविक बात है। उसमें भी जब से अमेरीका ने W.H.O. को दान देने से इन्कार कर दिया है, तब से **W.H.O. पर बिल गेट्स का एकाधिकार हो चुका है।**

भारत राष्ट्र की स्वास्थ्य नीति W.H.O. के साथ हुए करार के मुताबिक, उन्हीं के निर्देश पर बनती है, **यानी भारत और ऐसे बहुत सारें राष्ट्रों की आरोग्यनीतियाँ बिल गेट्स के कन्ट्रोल में है।** यह ही बिल गेट्स अनेक मल्टिनेशनल फार्मास्युटिकल कंपनीयों में पार्टनर भी है। उनमें अरबों-खरबों डॉलर का निवेश भी है। **दवाईयाँ और वैक्सीन्स की ज्यादा से ज्यादा कैसे बीक्री हो पाए, उस प्रकार की स्वास्थ्यनीति W.H.O. के द्वारा विश्व के देशों को बनी बनाई मिलती है। इसीलिए तो भारत में आयुर्वेद भुलाया जा रहा है और ऐलोपेथी का प्रचार बढ़ रहा है।** और बाबा रामदेव जैसे लोगों की कोरोना की दवाईयाँ का गला घोंटा जा रहा है...

बिल गेट्स W.H.O. के द्वारा कोरोना का लगातार सख्त भय फैलाने में कामियाब रहा है। लोगों की ऐसी मानसिकता बनाने में वो सफल रहे है कि वैक्सीन नहीं मिलने पर उनका बचना मुश्किल है। अब जैसे ही वैक्सीन बाजार में आयेगी, समस्त विश्व की प्रजा उस वैक्सीन को लेने के लिए कतारें लगा देगी। सरकारें भी गाँव-गाँव तक वैक्सीन पहुँचायेगी और बिल गेट्स अरबो डॉलर कमा लेगा, सरकार का जयजयकार होगा।

यह प्लान पहली बार का नहीं है, इससे पहले भी अनेक बार HIV, बर्ड फ्लु, स्वाइन फ्लु, सार्स, इबोला, निपाह इत्यादि वायरस का भी डर फैलाया गया था और अरबों-खरबों की कमाई की गई थी। वैसे भी अब एलोपैथी चिकित्सा में डराकर बेवजह के ऑपरेशन-टेस्ट-दवाई करवाने की प्रथा सी हो गई है, बेचारी भोली-भाली प्रजा !!! कब समझ पाएगी, ये सारा खेल ...

कोरोना की वैक्सीन बनानेवाली मुख्य 7 कंपनीयों में बिल गेट्स की हिस्सेदारी है, 5 करोड डॉलर का दान (या निवेश !) दिया है। W.H.O. को भी वैक्सीन, कोरोना लडाई एवं संशोधन (खोज) के लिए 300 मिलियन डॉलर (30 करोड डोलर) देने की बिल गेट्स ने घोषणा की हुई है। इन 7 कंपनीयों में से मोर्डेना कंपनी सबसे आगे है, उन्हें बिल गेट्स की ओर से 2 करोड़ $ और U.S. सरकार की ओर से 95 करोड़ से ज्यादा $ मिले हैं। अमेरीका के कोरोना टास्क फोर्स के चीफ एन्थनी फोसी भी इसमें पार्टनर है। वैक्सीन खोजने के लिए बनी कमिटि के चीफ मोन्सेफ सलाउइ के पास इस कंपनी के 1 करोड़ डॉलर के शेयर है। यह वैक्सीन बाजार में आये तब तक डिमान्ड (मांग) का माहौल खड़ा रखने के लिए W.H.O.

बार-बार लॉकडाउन का समर्थन करता रहता है। छूट देने के खिलाफ चेतवनी देता रहता है। बिल गेट्स भी पहले से ही 'जब तक वैक्सीन नहीं, तब तक लॉकडाउन' का समर्थन करता रहा है। भारत का आरोग्य मंत्रालय भी यही कह रहा है | In Short, यह लोग डर को बरकरार रखना चाहते है।

डर को बरकरार रखने के साधन के रुप में मीडिया का उपयोग किया जाता है। जिसके हाथ में W.H.O. जैसी वैश्विक संस्था और कई सारे देशों के आरोग्य मंत्रालय खिलौने की तरह खेलते रहते हो, वे लोग आंतरराष्ट्रीय न्यूज़ एजेन्सीज़ को पैसे के जोर पर क्यों नहीं खरीद सकते हैं |

यहां पर याद रहे कि, **बिल गेट्स जैसे अनेक उद्योगपतियों का भारी वर्चस्व हरेक देश की हरेक सरकार पर होता ही है |**

सारांश यह है कि, इस कोरोना स्टोरी का मुख्य विलन है बिल गेट्स | आज सारी दुनिया को उसने अपने कंट्रोलमें लिया है | मगर पर्दे के पीछे का विलन कौन है ??? यह जानने के लिए आगे पढिए...

इस लिंकमें श्री कपिल बज़ाज नामके पत्रकार बता रहे है कि किस तरह बिल गेट्स वगैरह लोगों ने भारतीय प्रजा के स्वास्थ्य के साथ सन् 2006 से खिलवाड़ करना शुरू कर दीया है |

https://bit.ly/34QjJux

देखिए ! कोरोना टेस्ट किट का वितरण सभी देशों में 2018 की साल में ही शुरू हो गया था |

https://bit.ly/384hNAG

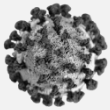

क्या आप जानते हो कि प्लान कोरोना कब से बन रहा था ?

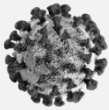

→ सन 2010 में हॉलिवूड में '**कोन्टेजियन**' नाम की मूवी आई थी। जिसमें कोरोना जैसे वायरस की बात है। आश्चर्य की बात यह है कि वर्तमान में समग्र विश्व में एक समान रुप से जो लॉकडाउन, सोश्यल डिस्टेंसिंग, मास्क, पी.पी.ई. किट, मौत का मंजर इत्यादि दिख रहा है, वे सब कुछ इसी प्रकार उस मूवी में, इसी नाम से दिखाया गया था, क्या यह सिर्फ संयोग होगा ?

भारत में भी सोनी टी. वी. पर 4-5 साल पहले 'लापतागंज' नामकी सीरियल के 86 वें एपिसोड़में भी कोरोना जैसे वायरस की स्टोरी बताई थी, जिसमें मास्क और सोश्यल डिस्टन्स की बात भी थी !! यह सब प्रजा की मानसिकता बनाने के लिए किया जाता है |

ग्रे स्टेट नाम की एक मूवी बनी थी | उसके निर्देशक को यह प्लान की जानकारी पहले से ही थी | अत: लोगों को जाग्रत करने के लिए उसने यह मूवी बनाई थी जिसकी सजा के रूपमें उसकी सपरिवार हत्या हुई थी |

→ बिल गेट्स जैसे कोई त्रिकालज्ञानी हो, वैसे उसने 2015 के Ted Talks में कोविड -19 प्रकार की बिमारी की भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि, "The greatest threat that mankind might face in the future is not nuclear war but an out-break of an epidemic . If anything kills 10 million people in the next few decades, is most likely to be a highly infectious virus rather than a war, not missiles but microbes . " (भविष्य में मानवजाति के सामने बड़े से बड़ा जोखिम अणुयुद्ध के कारण नहीं, मगर महामारी के प्रकोप से खड़ा होनेवाला है । आनेवाले कुछ दशकों में यदि एकाध करोड़ लोगों का संहार करनेवाला कोई होगा तो वह मिसाईल्स नहीं, कोई वायरस होगा ।) **इस भाषण के आधार पर कह सकते है कि बिल गेट्स को कोरोना जैसी महामारी (या मानवसर्जित सामान्य वायरस ?) की जानकारी थी, जिसका उल्लेख उसने 2015 में ही कर दिया था।**

→ दुनियाभर में कोविड -19 जैसी बिमारी फैलने की जानकारी कई सारे बड़े-बड़े लोगों को भी थी और उन्होंने इस बारे में पहले से ही तैयारी करके रखी थी। वायरस के बारे में शोधकर्ता जोन हॉपकिन्स सेन्टर ने वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम और बिल एन्ड मिलिन्दा

गेट्स फाउन्डेशन की हिस्सेदारी में दिनांक 18-10-2019 के दिन न्युयोर्क की 'ध पियेरे' नामक फाइव स्टार होटल में 'इवेन्ट -201' नाम का कार्यक्रम आयोजित किया था, जिसमें कोरोना वायरस का निर्देश करके यदि महामारी का प्रकोप होगा तो उसका मुकाबला कैसे करना ? उसका कम्प्यूटर सिम्युलेशन के द्वारा दिग्दर्शन किया गया था। इस मिटिंग में अमेरीकी सरकार का CDC (सेन्टर फोर डिसीज कंट्रोल) के डायरेक्टर, इन्टरनेशनल मोनिटरी फंड के, प्राईवेट बेंकों के, हवाईजहाज की कंपनीयों के, मीडिया हाऊस के, होटेल प्रबंधन के विभिन्न प्रतिनिधियों की भी उपस्थिति थी। **जिस में महामारी के कारण पैदा होनेवाली परिस्थिति का जैसे ड्रेस रिहर्सल भी किया गया था।** इस परिषद में जैसे कि विश्वभर में कोरोना वायरस फैलाकर दुनिया के अर्थतंत्र को तबाह करने का षड्यंत्र ही बनाया गया था।

कोरोना में सिर्फ वैक्सीन का आर्थिक मुनाफा ही नहीं, अन्य भी एक गंभीर अजेंडा है|

→ सन 2010 में न्युयोर्क में दुनियाभर के बुद्धिजीवियों के सामने बिल गेट्स ने Ted Talks में स्पष्ट कहा था कि, "The world today has 6.8 billion people, thats headed up to about 9 billion . Now if we do a really great job on new vaccines, health care, reproductive health care services we can lower that (the population) by perhaps 10 or 15 percent (आज दुनिया में 6.8 अरब की आबादी है, जो 9 अरब की ओर बढ़ रही है। यदि हम नई वैक्सिन, आरोग्य-प्रजननविषयक स्वास्थ्य सेवाएँ इत्यादि विषय में जोरदार कार्य करते है तो हम दुनिया की आबादी 10 से 15 प्रतिशत जितनी कम कर सकते है।)

यानी दुनिया की आबादी कम करने के साधन के रुप में बिल गेट्स टीका का उपयोग करना चाहता है ! कोरोना वायरस की वैक्सीन भी दुनिया की आबादी कम करने के लिए ही वे लोग बना रहे हो, तो इस संभावना को कौन नकार सकता है भला ?

→ जनसंख्या नियंत्रण की बातें वो इसके पहले भी अनेक बार कर चुका है। आबादी नियंत्रण के कार्यक्रम, गर्भनिरोधक साधन इत्यादि भी इसी दिमाग की पैदाइश है।

→ U.N.O. (W.H.O. को जिसका संतान मान सकते हो) ने भी 1992 में ब्राजिल के रियो-डि-जानेरो शहर में अर्थ समिट नामक कार्यक्रम आयोजित किया था, जिसमें 100 से ज्यादा देशो के प्रतिनिधि आये थे, जिसमें एजण्डा -21 नामक दस्तावेज पर दस्तखत

करवाई गई थी, उसमें एक एजण्डा जनसंख्या कम करने का भी था। ठीक ऐसी ही बात अजण्डा -2030 में भी है | एजण्डा 21 और एजण्डा 2030 की pdf आसानी से उपलब्ध हो सकती है |

क्या टीके से आबादी कम हो सकती है ?

→ मुस्लिमों में ऐसा जबरदस्त प्रचार चल रहा है कि **पोलियो के टीके से प्रजनन सामर्थ्य (Fertility) कम होती है।** इसीलिए, वे पोलियो का टीका लेने से मना करते है।

→ U.N.O. के द्वारा केन्या में 23 लाख महिलाओं को धनुर का टीका लगाया गया था। परिणाम-निरीक्षक प्रामाणिक डॉ . वाहोम नगारे की रिपोर्ट : **टीके में प्रजनन सामर्थ्य कम करनेवाले होर्मोन डाले गये थे।**

→ U.S.A. के C.D.C (सेन्टर फोर डिसिझ कन्ट्रोल) विभागने कभी भी यह जाँच नहीं की है कि फ्लु के टीके से गर्भवती महिलाओं को कोई बूरी असर (Reaction) तो नहीं होगी ना ? और सचमुच ऐसी महिलाओं को फ्लु के टीके से गर्भपात होने लगा या मृत बच्चों का जन्म होने लगा। एक N.G.O. के सर्वे के हिसाब से इस टीके से गर्भपात की संभावना 4250 % बढ़ जाती है। हकीकत में कहे तो किसी भी टिके से गर्भवती महिलाओं के उपर होनेवाली असर और टीके में रहे हुए द्रव्यों से कैन्सर वगैरह की संभावनाओं के बारे में कभी कोई संशोधन होता ही नहीं है।

विषमय वैक्सीन

→ आज तक दुनिया में एक भी वैक्सीन ऐसी नहीं आई है, जिसमें कोई प्राणिज तत्त्व न हो और जिसके कातिल प्रयोग जानवरों पर न किए गए हो। चेचक के टीके में **गाय के उबटन से निकाले खून का** इस्तेमाल किया जाता है। रेबीज़ के वैक्सीन में **भेड़ के मस्तिष्क के खून** का इस्तेमाल होता है। पोलियो वैक्सीन में **बंदर के गुर्दे की कोशिकाओं** का उपयोग होता है। कहीं **कुत्ते के गुर्दे की कोशिकाओं**, कहीं **बंदर के खून**, तो कहीं पर **घोड़े के खून** का उपयोग किया जाता है ...

→ कोरोना वैक्सीन के लिए ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी चिम्पांजी रक्त का उपयोग कर रहा है। हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, **चिम्पांजी की भारी कमी के कारण, वैक्सीन संसोधन का काम अटक जाने कि नोबत में है | तो उसने कितने चिम्पांजी की कत्तल की होगी ?** क्रैब के रक्त का भी उपयोग कुछ कंपनी में किया जाता है।

→ भारत बायोटेक 'कोवेक्सीन' नामका टीका बना रही है, जिसमें **नवजात बछड़े के खून से निकाला बोवाईन सिरम** का इस्तमाल हो रहा है |

→ बिल गेट्स की 'गावी' नाम की संस्था ने **सिरम इन्स्टिटयूट** को 20 करोड़ डोज़ का ऑर्डर दीया है | उसमें भी बोवाईन सिरम का उपयोग हो रहा है | **इसमें से 10 करोड़ डोज भारत के लिए अनामत रखे गए है |**

→ जानवरों पर प्रयोगों के दौरान भी बहुत हेवानियत की जाती है । **और प्रयोग के बाद संक्रमण को रोकने के लिए इंजेक्शन द्वारा मारे जाते हैं । वैक्सीन के हर आविष्कार के पीछे करोड़ों लाशें गिरती है । गांधीजीने अपनी 'आरोग्यनी कुंची' नामक किताब में टीकें को बर्बरताभरी प्रथा गिनाई है |**

→ दूसरा, **मानव कोशिकाओं का भी उपयोग भी पोलियो जैसे कई टीकों में किया जाता है |** गर्भपात क्लीनिकों के लिए पैसे कमाने का मुख्य स्रोत वैक्सीन कंपनी को भ्रूण की बिक्री है, और इस प्रलोभन में डॉक्टर किसी भी बहाने गर्भपात की सलाह भी दे देते हैं ! रक्तदान का भी बहुत सारा खून इन वैक्सीन कंपनियों तक पहुँचता है। जिससे वे सीरम सेपरेशन करते हैं। अब समझें कि रक्तदान का इतना प्रचार क्यों होता है? ? ?

→ **मांसाहारी प्रजा भी कभी जानवरों या इंसानों का खून नहीं पीती । और करोड़ो शाकाहारियों के शरीर में टीके के नाम पर खून के इंजेक्शन दिए जाते हैं ।**

→ तीसरा, यदि किसी अन्य मानव के रक्त को दूसरे मानव में इंजेक्ट किया जाता है, तो ऐसी संभावना है कि व्यक्ति का डीएनए विकृत हो जाएगा। जिसकी चर्चा कभी नहीं होती।

→ श्रीमती मेनका गांधी ने दवाई और खाद्य पदार्थ के कवर पर प्राणिज तत्त्व की मिलावट का उल्लेख करने के लिए कानून लाने के लिए सुप्रीम कोर्ट से लड़ाई लड़ी। उच्च न्यायालय में जीते, लेकिन **फार्मा. कंपनियों के दबाव के कारण, सुप्रीम कोर्ट ने दवाईयाँ के उपर हिंसक तत्त्व की मिलावट का उल्लेख करने का कोई आदेश नहीं दिया था,** केवल खाद्य पदार्थों को लाल निशान से चिह्नित किया गया । यहाँ फार्मा. कंपनियों की ताकत का अनुमान होता है ।

→ ऐसे हिंसक टीके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक तो नहीं है, बल्कि हानिकारक हैं ।

(I) इन टीकों में पारा, लोहा आदि जहरिलें धातु अनिवार्य रूप से शामिल होते है । इससे बच्चा मंदबुद्धि हो सकता है। ज्ञानतंतु सम्बन्धी रोग हो सकते है, कैंसर की संभावना भी है | **दुनिया में कम उम्र में कैंसर होने के किस्से बढ़ रहे है, जिसका एक मुख्य कारण टीकाकरण हो सकता है |**

(II) अमेरिका में, बच्चा 5 साल का होता है, तब तक उसे 27 प्रकार के टीके लगाए जाते है | जब वह 18 वर्ष का हो जाता है, तब तक यह आंकड़ा 50 के करीब होता है । (भारत में यह आंकड़ा 30 का है।) **1980 में 10,000 बच्चों में से 1 को ऑटिज़्म जैसी बीमारी (व्यक्तित्व में खामी लाती बिमारी) का सामना करना पड़ता था । और 2017 में 36 में से एक बच्चें को !!**

भारत में भी विशाल युवाधन निर्माल्य-निस्तेज लगता है, कोइ विशेष प्रतिभा-सत्त्वादि गुण नहीं दिखते, उसका मुख्य कारण यह टीके हो सकते है |

जानकर आश्चर्य होगा कि अमेरिकामें टीके बनानेवाली कंपनी के सामने कोइ केस फाइल नहीं कर सकते हो, उनके पास कोइ भी नुकसानी के बदले भरपाइ भी नहीं मांग सकते हो, ऐसा कायदा है | (Nat. Childhood Vaccine Injury Act, 1986 Public Readness & Emergency Preparedness Act (PREP) 2005) उसके बदले सरकार भरपाइ करती है, जिसका 1988 से आज तक का आंकडा 3.8 अबज $ हुआ है |

(iii) उत्तर U.S.A. और यूरोप में ओरल पोलियो वैक्सिन के सामने विरोध हुआ था | यह बचे हुए डोज़ पूरे करने के लिए 2011 में भारत में "पोलियो प्लस प्रोग्राम" शुरू करने में आया था | और मज़े की बात यह है कि 2010 में ही भारत को पोलियोमुक्त जाहिर किया गया था, और इन **पोलियो के टीकों से भारत में 47,000 बालको को पोलियो हुआ था|** सिर्फ वैज्ञानिकोने इसका नाम बदल के N.P.E.F.C. (नोन पोलियो एक्युट फ्लोसिट पेरालिसिस) कर दिया |

(iv) जगन्नाथ चेटरजी नाम के सज्जन खुद टीकों के साइड-इफेक्टस के शिकार बने, उन्होंने कई सालों तक टीकों के साइड-इकेक्टस के विषय में संशोधन किया था | उनका आक्षेप है कि चेचक से T.B. होने की शक्यता है | जिन प्रदेशों में चेचक के टीकें दीए गए थे, वहाँ TB की मात्रा अधिक देखने को मिली थी, अर्थात् **एक टीका दूसरे नये रोग को निमंत्रण देता है, जिसके नये टीके लेने से, वह अन्य नये रोगों का आमंत्रित करता है |** संक्षेप में, टीकों के नाम से प्रजा के स्वास्थ्य के साथ एक खेल खेला जा रहा है | लोग पीड़ित होते है, अनाप-सनाप खर्चा करते है और फिर भी अकाल मर जाते है |

(v) इंग्लेंड में "एंटि वेक्सीनेशन सोसायटी" नाम की एक संस्था है, जो टीकें के विरोध का प्रचार करती है | आज वहाँ और अमेरिका के कितने शहरो में लोग टीकें का सखत बहिष्कार करते है | सरकार द्वारा अनिवार्य के रूपमें घोषित कितने ही टीकें जन-आक्रोश के कारण से उन शहरो में नहीं दिए जा सकते है |

→ ये राक्षसी और कातिल साइड-इफेक्ट्स वालें टीकें 100% असरकारक भी नहीं होते, सिर्फ 50-60% प्रायोगिक सफलता मिलती है, और उसे मान्यता देते है |

(i) अमेरिका कोरोना टास्क फ़ोर्स के चीफ एंथोनी फोसी के शब्द : **कोरोना के टीके मुश्किल से 50% प्रभावशाली साबित होगे |**

(ii) जिस बिल गेट्स ने भारत बायोटेक जैसी अनेक भारतीय और विदेशी कंपनीओ में टीकें के लिए पैसे इन्वेस्ट किए है, उनका कहना यह है कि यह **टीके लेने के बाद भी कोरोना नहीं होगा, एसा कह नहीं सकते |**

(iii) WHO के कोविड-19 टीम के खास प्रतिनिधि डो. डेविड नाबारो कहते है कि कोरोना के टीकें सलामत और असरकारक होगे, ऐसा कह नहीं सकते |

(iv) 'फेफड़े के टी. बी. के टीकें 'बी.सी. जी.' की असरकारकता को जांचने के लिए ICMR ने दक्षिण भारतमें 1999 से 15 वर्षो तक सर्वे किया | (PMID 10573656) परिणाम : **टी. बी. के टीकें से कोई सुरक्षा मिलेगी ऐसा नहीं है |** फिर भी आज भी भारत में यह टीकें दीए जाते है | **यदि ऐसा सर्वे हर टीकें के लिए किया जाए, तो बड़ी पोल का पर्दाफाश हो जाएगा |**

लोग टीकें लेकर भी बचे या न बचे, साइड-इफेक्ट्समें भले मर जाए, फिर भी कंपनीओं को तो मलाई मिलने ही वाली है |

→ इन टीकें के परिणाम जाँचने के लिए उद्योगपतिओं WHO के द्वारा, भारत जैसे गरीब देशों को शिकार बनाते है, वहाँ मुफ्त में टीकें देकर उसकी असरकारकता (या घातकता ?) का निर्णय करके अमीर देशों में महेंगे दाम में बेचते है |

(i) बिल एण्ड मिलिन्दा गेट्स फाउन्डेशन ने PATH (Programme For App-ropriate Tech. In Health) नाम की संस्था को फंड देकर, उसके द्वारा 2010 के साल में तेलंगणा के खमाम जिल्लें में 16000 गरीब कन्याओं के ऊपर प्रयोग किया था | उसमें 5 कन्याएँ मर गई, बहुत सारी तो बीमार हुई |

(ii) उसके थोड़े समय बाद वडोदरा जिल्लें के आश्रमशालाओं की 14000 गरीब कन्याओं का शिकार किया | उसमें भी 2 कन्या की मौतें हुई और बहुत सारी बीमार हुई |

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन प्रयोगों के लिए उनके माता-पिता की सहमति नहीं मांगी जाती है। इस घटना के बाद, कल्पना मेहता, नलिनी भानोट और डॉ. रुक्मणी राव – यह तीन समाजसेविकाएँ अदालत में गए और इन प्रयोगो को स्थगित करवाया। हालाँकि, इस तरह के प्रयोग अभी भी जारी है। कुछ साल पहले एम. आर. वैक्सीन अनिवार्य रूप से गुजरात के स्कूलों में दिया गया था, जबकि सरकारी दस्तावेज के अनुसार वह स्वैच्छिक थे |

(iii) GAVI (ग्लोबल अलायन्स फॉर वैक्सीन एण्ड इम्युनाईझेशन) संगठन बिल गेट्स के फंड के माध्यम से गरीब देशों में टीकाकरण का प्रचार करता है |

(iv) बिलगेट्स और ऑक्सफोर्ड यूनि. के बीच हुए समझौते के अनुसार भारत की, भारत बायोटेक कंपनी को वैक्सीन पैटर्न बेचा जाएगा और भारत में उत्पादन करके 3 $ की अधिकतम किंमत पर भारतीयों का टीकाकरण करना होगा।

→ जिसे लोग अबजों का दान करनेवाला सज्जन शिरोमणि मानते है, वह कितना कपटी है, यह मालुम हो गया होगा... इसी कपटी ने, 'हाऊडी मोदी' कार्यक्रममें हमारे प्रधानमंत्री को 'गोलकीपर्स ग्लोबल गोल्स अवोर्ड' से सम्मानित किया था | सोचने की बात यह है, कि एक विराट देश के प्रधानमंत्री को अवोर्ड देने लायक पद और अधिकार उसे किसने दीया ??? हमारे प्रधानमंत्रीने भी इस बिल गेट्स के साथ कोरोना के टीके के विषय में बात की थी...

→ इन सबसे इतना तो मालुम पडता ही है कि देशी या विदेशी जो टीकें आएंगे वो बिल गेटस के घर के ही होंगे !! अर्थात्, यह लोगों की प्रजनन क्षमता को नष्ट कर देगा! या धीमा जहर होगा !!! अगर उन लोगों को एजेंडा -2030 के अनुसार 2030 तक दुनिया की आबादी को 50 करोड़ तक लानी है, तो प्रजनन क्षमता के विनाश से कुछ भी संभव नहीं होगा! अर्थात्, आनेवालें टीकें सच्च में धीमा जहर ही होगे !!! क्या यह कोरोना का नाटक इसलिए ही खड़ा किया गया होगा ?

→ वर्तमान में 55% अमेरिकी आबादी का मानना है कि बिलगेट्स दुनिया में विश्व की आबादी को कोरोना के माध्यम से कम करना चाहता है ! अत: वे लोग टीके का बहिष्कार कर रहे है, प्रजा के रोष को देखते वहाँ की सरकार को वचन देना पड़ा कि, कोरोना के टीके अनिवार्य रूप से नहीं दिये जाऐंगे | इस तरह, फ्रांस के 33%, गाबून के 26%, टोगो के 25% रशिया के 24%, स्वित्झर्लैण्ड के 22%, ऑस्ट्रेलिया, आयरलैण्ड-अमेरिका-बेल्जियम के 21% और बूरकिना फासो के 20% लोग कोरोना के टीके के विरोध में है | जर्मनी में भी बड़े पैमाने पर आन्दोलन चल रहा है | शायद इन देशों में टीके अनिवार्य नहिं होगे, मगर भारत में ?

→ सबसे चौंकाने वाली रिपोर्ट: बिल गेट्स का जिसमें निवेश है और अमेरिकी सरकार का तन-मन-धन से जिसे सहयोग है, वो मोर्डेना कंपनी पारंपरिक पद्धति को छोड़कर नए तरीके से कोरोना वैक्सीन का संशोधन कर रही है। इस वैक्सीन से मनुष्य के डीएनए को बदला जाएगा, ताकि वह स्वयं ही बीमारी से लड़ सके। यह एम-आरएनए वैक्सीन एक प्रकार की जेनेटिक इंजीनियरिंग है | जिसे Germline gene editing कहा जाता है।

यह वैक्सीन लोगों के डीएनए के साथ छेड़छाड़ करता है, यह प्राकृतिक डीएनए को विकृत करने का एक तरीका है | **डीएनए विकृत मतलब कि पूरा शरीर विकृत-मानस**

विकृत है ! जिनेटिकलि मोडीफाईड फल आज बाजार में उपलब्ध हैं, जिसके आकार और गुणधर्म को इस प्रकार परिवर्तित (विकृत) किए जाते हैं। भारतीय बज़ार में उपलब्ध बी. टी. कापूस भी इसी प्रकार का है | तो **मनुष्य के आकार-गुण में किस तरह का परिवर्तन (या विकृति) आएगा, वह कौन कह सकता है ???** दुर्जन के हाथमें रही छुरी कुछ भी कर सकती है !

डी. एन. ए. को विकृत करने से विश्व से सभी मानवों के स्वभाव एक समान हो सकते है, यानी कि शुष्क और संवेदनाहीन ! इससे बुद्धिशक्ति तीव्र हो जाती है, मगर संवेदनाएँ नष्ट होती| अर्थात्, मानव रोबोट जैसा बन जाऐगा | यदि संवेदनाएँ मर जाऐगी, तो प्रेम, श्रद्धा, भक्ति, उदारता, करुणा जैसी पवित्र भावनाएँ इस विश्वमें कहाँ से रहेगी ? अगर एक संत को ऐसी वैक्सीन दी जाए, तो क्या वह वास्तव में संत रहेगा ???

प्रेम और सहानुभूति नहीं है, तो परिवार व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था कैसे रहेगी ? हरेक इंसान अकेला होगा ! और एजंडा-21 में यह भी एक एजण्डा है |

सैनिको के डी. एन. ए. बदलने से वे 'आर्यन मैन' जैसे तीव्र शक्तिशाली बन जायेंगे, ऐसा रिसर्च पेपर्समें कहा जाता है | यदि समग्र विश्वमें U.N.O. नाम की एक ही सरकार होगी, कही कोई सरहदें नहीं होगी, तो इन सैनिकों को किसके सामने खड़ा रखा जाएगा ? सीधी बात है, प्रजा के सामने...अगर आप बिग गर्वन्मेन्ट की आज्ञा शिरोधार्य न करो, तो....

इस किश्मकी वैक्सीन मोर्डेना, इनोव्यो और कॉन सिनो बायोलोगिक्स बना रही है | और इसमें मोर्डेना सब से आगे है, उसे अमेरिकी सरकार (DARPA) की ओर से 955 million दानमें मीले है |

रशिया और चीन भी इस रेस में लगे हुए है |

→ यदि यह टीका मृत्यु, गंभीर बीमारी या आनुवंशिक विकार का कारण बनेगा, तो कौन जिम्मेदार होगा ? क्या यह स्वीकार भी होगा कि यह नुकसान टीके से ही हुआ है ? या फिर उसे नई महामारी गीनाई जाएगी ???

→ 15 अगस्त को भारतीय बाजार में टीके लोंच होनेवाले थे, जिसका कई विशेषज्ञों ने भारी विरोध किया था | क्योंकि कोई भी टीका बनाने मे आंतर्राष्ट्रीय नियमानुसार 18 महीने की आवश्यकता होती है। मानव ट्रायल में मानव को ऐसे टीका लगाने के बाद 1 साल तक उसके दुष्प्रभावों को देखना होता है। आज तक, एक भी वैक्सीन ऐसी विकसित नहीं हुई है जो 18 महीनों में तैयार हुई है। कुछ टीके को 30-30 साल लग गए ! और कुछ तो अभी भी बनी ही नही है।

अर्थात्, पर्याप्त परीक्षण के बिना लोगों को टीका लाया जाएगा ! चीन और रूस ने

भी कम समय में इस तरह से टीके बनाने शुरू कर दिए हैं। टीके का परीक्षण रिपोर्ट भी सार्वजनिक नहीं किया गया है और आज विशेषज्ञों के बीच उन टीकों की बहुत कड़ी आलोचना हो रही है। इस टीके के कारण, एक देश ने चीनी नागरिकों पर प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है !! निषेध किया है | जब कि, भारतमें इन टीकों की ट्रायल और उत्पादन की मंजूरी दी गई है ! कल ये टीके आम जनता को दीए जाऐंगे तो ?

रशिया के स्फुटनिक टीकें की ट्रायल का यूरोपीय देशों ने बहिष्कार किया है | जब कि, भारत में इन टीकें की ट्रायल और उत्पादन की मंजूरी दी गई है ! कल ये टीकें आम जनता को दीये जायेंगे तो ???

सारांश: कोई भी टीका जून 2021 से पहले (या उसके बाद भी) भारत में आता है, तो उसकी सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। आरोग्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन कह रहें है कि, यदि टीकें की सलामती के बारे में कोई शंका उठेगी, तो सबमें पहला में लूँगा | यह सिर्फ एक स्टन्ट साबित हो सकता है | किस को पता है कि वे टीका लेंगे या स्टेरेलाइज्ड़ वॉटर ??

आबादी नियंत्रण (विनाश) की पापी सोच आई कहाँ से ?

दि . 1 मई 1776 के दिन 'इल्युमिनाटी' नामक एक गुप्त संस्था की स्थापना हुई। इस संस्था के शीर्ष स्थान पर वंश परम्परा से आये हुए 13 परिवार है। जिसमें रोथ्सचाइल्ड परिवार मुख्य है। दूसरी श्रेणि में 33 और तीसरी श्रेणि में 300 सभ्य होते हैं। आगे बढ़ते हुए आज विश्व के करीबन हर एक देश में इसके सदस्य गुप्तवेश में है। हकीकत में कहे तो इसी संस्था की अनगिनत शाखा संस्थाएँ है। इनमें रेडक्रोस वगैरह कुछ संस्थाएँ प्रसिद्ध है, जब कि मूल संस्था एवं उसके सदस्यों को गुप्त ही रखा गया है। (ज्यादा जानकारी के लिए online पढिए : 'illuminate' by the Henry Makoc (Ph.D.)

इन लोगों का नियंत्रण अमेरिका के फेडरल रिज़र्व पर है, जो डॉलर की नोट छापने की मोनोपोली (एकाधिकार) रखता है। युनो, वर्ल्डबैन्क, इन्टरनेशनल मोनिटरी फंड, WHO, Unesco, Unicef, World economic forum, World trade organisation, Swiss Banks वगैरह उपर भी उनका कन्ट्रोल है। विश्व के सभी सोने-हीरे के खदानें एवं तेल के कुएँ भी परोक्ष रूप से उनके कब्जे में है। दुनिया के देशों में अरबों डॉलर का कारोबार करनेवाली मल्टिनेशनल कंपनियाँ पर भी उनकी मालिकी है। दुनिया के देशों की सरकारों को अरबों रुपयों की loan देकर उन्होंने गुलाम बनाकर रखा है। जिसके कारण उन सरकारों को प्रजा के हितको गौण करके उनके आदेशों का पालन करना पडता है।

इस संस्था में विश्व के चोटी के नामचीन उद्योगपति एवं राजनेता है। **उनका अंतिम लक्ष्य प्रादेशिक राष्ट्र, भाषा, संस्कृति, धर्म, जीवनशैली, शिक्षा आदि खत्म करके विश्वव्यापी एक Big government की स्थापना करना है। यह Big government मतलब U.N.O., जो संपूर्ण विश्व को पूर्णरुप से नियंत्रित करेगा।** और आज कोरोना के माहोल ने यह दिखा भी दिया कि, उन लोगों का करीबन सभी देशों पर कैसा नियंत्रण है। सभी जगह समान रूप से लॉकडाउन, सोशल डिस्टन्स, मास्क, टीका, भय का माहोल आदि उनकी शक्ति का ही परिचय दे रहा है।

लडाई करके पूरी दुनिया को जीतना असंभवित है, जितने के बाद भी विद्रोह हो सकता है। **इसीलिए उन्होंने विश्व के लोगों को मानसिक और आर्थिक रुप से गुलाम बनाना शुरु किया।** पश्चिमी शिक्षण से प्रजा को मानसिक रुप से गुलाम बनाई गई, अश्लील फिल्मों से निर्वीर्य बनाई गई, लीव-इन + सजातीय विवाह + स्त्री सशक्तिकरण से परिवार व्यवस्था तोड़ दी। जहरीलें खाद और दवाईयों से शारीरिक शक्तियाँ तोड़ दी।

वर्तमान में **ICMR ने कहा है कि कोरोना के बाद दूसरी महामारियाँ भी आएगी!** क्या त्रिकालज्ञान हुआ है इन्हें ? इन लोगों का आयोजन है कि ऐसे वायरस Biotech L-4 लेबोरेटरी में बनाकर फैलाना। लॉकडाउन-सोशल डिस्टेन्सिंग, मास्क वगैरह कायमी बन जायेंगे। लोग, विशेषरुप से बच्चें और युवा, डिप्रेशन के शिकार बनेंगे। अकेलेपन और विचारशून्यता उनका स्वभाव बन जायेगा। पूरे विश्व की भविष्य की पीढ़ी एक साथ जज्बा खो बैठेगी ! मतलब, गुलाम ! जो भी कहा जायेगा, बिना विरोध मान लेगी। इस तरफ पोर्नोग्राफी में आज उन्हें डूबा दिया है। ओनलाइन पढ़ाई से बच्चों की सृजनक्षमता नष्ट हो जायेगी। रोबो-माईन्ड बन जायेंगे।

लोगों का घूमना फिरना बंद हो जायेगा, उत्सव बंद हो जायेंगे। भय के मारे प्रजा खुद ही घर में पड़ी रहेगी। सामाजिक संबंध साफ हो जायेंगे। धर्म की प्रवृत्तियाँ साफ हो जायेगी। लॉकडाउन से जिस तरह 50 % मजदूर बेरोजगार हो गये, वैसे ही **50-60 % आबादी हमेंश के लिए बेरोजगार बनकर भूखमरी या आत्महत्या करके मौत के मुख में चले जायेंगे।** उन्हें गुलाम के रुप में उपयोगी, पढ़ी-लिखी प्रजा घर में बैठकर वर्क फ्रोम होम करेगी। संक्षेप में कहे तो, **गरीब मर जायेंगे और गुलाम निर्वीर्य बनकर सेवा करेंगे।**

कृत्रिम महामारिओं से लोग नहीं मरेंगे, लेकिन भूखमरी, डिप्रेशन, दवाइयाँ और टीके से लोग मर जायेंगे। आज यह सब कल्पनाभर लग रहा है लेकिन पाँच साल बाद सच्चाई लगेगी।

जिसमें रोथ्सचाईल्ड की 43% साझेदारी (partnership) है वो अतिप्रतिष्ठित 'The economist' नामक मैगेजिन के मुखपृष्ठ पर वे लोग अपने भविष्य के आयोजन की

जानकारी गुप्तरुप से प्रगट कर देते है। 28-3-2020 के अंक में उन्होंने बताया है कि एक कुत्ते (विश्व की प्रजा) की जंजीर एक इन्सान (सरकार) के हाथ में है और उस इन्सान के गले में भी जंजीर है जिसका दूसरा छोर किसी भेदी हाथ में है ! कुत्ते और इन्सान के मुँह पर मास्क है और लिखा गया है- **'Everything is under control ! Big government, liberty and the virus'** आप सब समझ गये होंगे ...

विश्व की जनसंख्या 100 करोड़ तक लाने का कार्यक्रम कैसा है, देखिए !!!
https://youtu.be/V2G5UDX6XXo
यहाँ पर बताया गया है कि, विश्व की आबादी को नष्ट करने के लिए बिल गेट्स कैसे-कैसे उपाय कर रहा है |
https://bit.ly/2I7FBsZ

mRNA वैक्सीन का तथा चीप का परिचय देता वैज्ञानिक रिपोर्ट
shorturl.at/qxL02

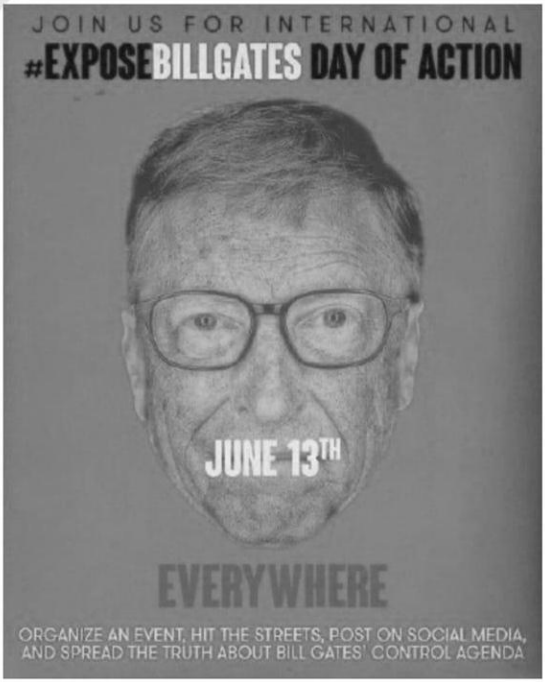

विश्वभर में बिल गेट्स के विरोध में लोग सक्रिय हुए है, और 13 जून को 'बिल गेट्स विरोधी दिन' के रूप में घोषित किया था !

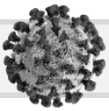

उनकी अगली योजना क्या है?

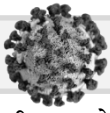

(१) यह लोग समग्र विश्व पर राज करना चाहते तो है ही, मगर साथ ही यह लोग विश्वकी प्रजा को चींटी-मकोड़ें गीनते है | उनके मन हम सब ह्यूमन वेस्ट (मानव निर्माल्य) है, धरती के बोज है | हमें वास्तव में जीने का कोई अधिकार ही नहीं है | हम जीकर सिर्फ और सिर्फ धरती पर प्रदूषण बढ़ा रहे है, जल आदि नैसर्गिक समृद्धि को तबाह कर रहे है | जिसके पास लखलूँट संपत्ति है, असाधारण सत्ता है, उन्हीं को यहाँ जीने का अधिकार है |

अत: वे लोग हमें मार डालना चाहते है, जिससे पृथ्वी जीने लायक बनेगी, प्रदूषण कम होगा, नैसर्गिक समृद्धि का दुर्व्यय कम होगा | इस आबादी विनाश के अनेक उपाय में से एक है वैक्सीन ! विश्व की समग्र प्रजा को एक साथ एक ही बिमारी की एक ही वैक्सीन मिले, इस तरह की यह सर्व प्रथम घटना बननेवाली है |

भारत में भी 140 करोड़ लोगों तक टीके पहुंचाने की व्यवस्था होगी, ऐसी घोषणा सरकार की तरफ से हुई है | साथ में कहा गया है कि, टीकाकरण के लिए इमर्जन्सी जैसी व्यवस्था होगी (मतलब जबरदस्ती ?) | 140 करोड़ को दो डोज देने के लिए 50000 करोड़ का फंड भी तैयार किया गया है | 50-70 लाख डोक्टर-पेरामेडिकल स्टाफ, 45 लाख पुलिस और 15 लाख सैनिको के लिए तो अनिवार्य टीकाकरण की घोषणा हो चूकी है | वैसे तो इन षड्यंत्रकारियों का मूलभूत प्लान समग्र विश्व को फिर से लोकडाउन कर अनिवार्य टीकाकरण करना था | विश्व का एक भी बच्चा बाकी रहना न चाहिए | मगर कहीं सारे देशो में इनकी पोल खूल चूकी है, लोग जबरदस्त विरोध कर रहे है | अत: यह प्लान का अमल शक्य नहीं रहा है | इसलिए अब सरकार के पास घोषणा करवा रहे है कि, सबको टीकें मुफ्त में मिलेंगे |

बिचारी भोली प्रजा लालच के मारे टीका लेने दौड़ेगी, और उनका मनसूबा सफल होगा |

भारत में 'अनिवार्य टीकाकरण' नहीं होगा, यह सोचकर राहत का दम मत लेना | क्योंकि, परोक्ष रूप से तो टीके को अनिवार्य ही करेंगे | जिस तरह से आधार कार्ड अनिवार्य करने कि सुप्रीम कोर्ट की मनाई होते, उसे इन्कम टैक्स, राशन, सरकारी नौकरी, जाहिर परिवहन आदि से जोडकर परोक्ष रूप से तो अनिवार्य ही किया गया है | जैसे आज भारत में हर कदम उसकी आवश्यकता रहती है | वैसे ही टीकाकरण के बारे में होंगा | सरकारी सुविधाएँ, स्कूल-कोलेजमें प्रवेश, जाहिर परिवहन आदि के लिए टीकाकरण अनिवार्य बनाया जाएगा |

15 अगस्त को जो हेल्थ कार्ड लोंच हुआ है, उसमें एक चीप है, जिसमें टीकाकरण की नोंध होगी | स्मार्ट फोन से इसका स्केनिंग होगा | आफ्रिका में प्रायोगिक रूप से COVI

PASS E-TRUST नामक डिजिटल हेल्थ पासपोर्ट लोंच किया है | इस प्रयोग में भी बिल गेट्स का GAVI ग्रुप जुडा हुआ है |

(२) बिलगेट्स, D.A.R.P.A. (Defense Advanced Research Projects Agency नामकी अमेरिकी संरक्षण विभाग की संशोधक उत्तरसंस्था) और B.A.R.D.A. (Biomedical Advanced Research & Deve. Authority) नामकी अमेरिकी संस्था) जैसी अनेक संस्थाएँ कहीं सालों से एक संशोधनमें जुटी हुइ है | वैक्सीन के साथ, उसी सूई से लोगों के शरीरमें क्वोंटम डॉट्स (QD) नाम का द्रव्य दाखल किया जाएगा | वैक्सीन डी. एन. ए. को विकृत करेगा और यह QD रेकोर्ड रखेगा की वैक्सीन लिया है, या नहिं | यह QD वास्तव में एक चीप है, जिसे मोबाइल की विशेष App से स्केन किया जा सकता है | उसके अनगिनत फायदें बताए जायेंगे, मगर उसके कुछ खौफनाक नुकसान भी है |

→ 'ध न्यु एटलान्टिक' नाम के मेगेजिन में एडम कीपर कहते है कि, **Mass Destruction (सामूहिक विनाश) का यह शस्त्र है | इस से माईण्ड कंट्रोल भी होता है | यह एक अदृश्य जासूसी यंत्र है, लोगों को मानसिक तनाव में डालने का एक तरीका है |**

→ सितम्बर, 2019 का STREEM KR आर्टिकल कहता है कि **विश्वमें अपना सार्वभौम साम्राज्य स्थापित करने को उत्सुक लोग इसका दुरूपयोग आसानी से कर सकते है** | (अर्थात्, सार्वभौमत्व स्थापित करने का यह एक साधन है !!)

→ व्हाईटनी वेब नाम के संशोधक **इसे डार्क एज़ण्डा गीनाते है** | उन्हें शंका है कि, इस एज़ण्डा में गूगल भी शामिल है, जो विश्व के लोगों की जासूसी करना चाहता है | **विश्व के सभी देशों में 5G का प्रसार इसी हेतु हो रहा है, क्योंकि 5G के बिना इस चीप से जासूसी शक्य नहीं है** |

→ स्टेनफर्ड युनि. की लीसील पेकार्ड नामक शिशु अस्पताल के डो. ग्रेस ली ने स्मिथसोन्थन नाम के मेगेजिन में कहा : **इससे व्यक्ति की प्राइवसी को भारी नुकसान हो सकता है,** और व्यक्ति को परेशान भी किया जा सकता है | (प्राइवसी को खतरा मतलब जासूसी ही ना...)

→ इलेक्ट्रोनिक प्राइवसी इन्फोर्मेशन सेंटर, वोशिंग्टन डी. सी. के डायरेक्टर मार्क रोटर्न- बर्ग कहते है कि, **यह जिस तरह से गाय-भेंस जैसे पशुओं को चिह्नित किया जाता है, वैसे मनुष्य को भी चिह्नित करने की योजना है,** प्राइवसी को खतरा होगा | (इस उपमा की गंभीरता तो समझते हो ना ?)

स्पष्ट शब्दों में कहे तो इस चीप से शारीरिक गतिविधियाँ और मन के विचारों पर सरलता से नजर रखी जा सकती है |

वास्तव में, यह बिल गेट्स का ID 2020 नाम का प्रोजेक्ट ही है | चीप के अनेक प्रकार वे लोग आज तक ढूँढ चूके है | कुत्ते जैसे पशुओं के दिमाग से चीप जोड़ी जाए, तो वह कुत्ता रिमोटधारक के निर्देशानुसार ही चेष्टा करता है | अर्थात्, माइण्ड कंट्रोल करती है यह चीप ! स्त्रीओं में लगाई जाती चीप गर्भनिरोधक का काम करती है | उस चीप का रिमोट Big Government के पास होगा | वह इजाजत देगा, चीप को निष्क्रिय करेगा, तो ही स्त्री गर्भधारण कर सकेगी | इससे आबादी नियंत्रण होगा | एक चीप ऐसी भी है, जिसमें साइनाईट भरा है, रिमोट दबाते ही सायनाइट का कैप्स्यूल खूलेगा, और...|

हमें कौन सी चीप दी जाएगी, वह नहीं जानते, मगर जो भी चीप होगी वह विनाशक ही होगी | **टीके के साथ यदि यह चीप हमें पूछे बिना हमारे शरीरमें दाखल कर दी जाऐंगी, तो क्या होगा ?** या फिर मीडिया के माध्यम से अनगिनत लाभ बताकर हमें चीप लेने के लिए उत्सुक भी कर सकते है |

(३) पूर्वोक्त चीप से शारीरिक और मानसिक गुलामी तो सही, मगर आर्थिक गुलामी भी आएगी | **लोकडाउन से जैसे हमारे दुश्मन हर्ड इम्युनिटि बनते रोकना चाहते थे, वैसे विश्व के सभी देशों का अर्थतंत्र भी एक साथ तोडना चाहते थे** | और यह मकसद उन्होंने बखूबी पूर्ण किया है | **भारत का माइनस 28.9% जी. डी. पी. इसका सबूत है** | यह हाल न्यून-अधिक रूप से सभी देशों के है | इकोनोमी क्रेश कर यह लोग डिजिटल करंसी लाना चाहते है | नकद रूपये नहिं, सिर्फ स्क्रीन पर दिखते आंकड़े, और वही आपके पैसे ! मानो तो पैसा वरना बच्चों का खेल !! सोना-चांदी जैसा सच्चा धन अधिकतम मात्रा में उनके पास है, और जो बाकी है, वह लूँटने की यह साजिश चल रही है |

उल्लेखनीय है कि भारत में बिटकोइन जैसी क्रिप्टो करेंसी अवैध थी, जो इसी साल सुप्रीम कोर्ट के तरफ से वैध हो चूकी है |

इसका नुकसान यह है कि इन्सान की सारी सम्पत्ति अब मोबाइल या चीप द्वारा सरकार के हाथ में आ जायेगी | सरकार जब चाहे तब किसी के भी खाते में से दंडरूपमें या अतिरिक्त कर के रूप में पैसे काट सकेगी और जरुरत पड़ने पर अपराध का बहाना बताकर बैंक का खाता स्थगित भी कर सकेगी | वह इन्सान अब एक सूई भी नहीं खरीद सकेगा | अब लोग सरकार विरुद्ध कुछ भी बोल या लिख नहीं सकेंगे | यदि लिखेंगे तो उनके अर्थाधीन जीवनव्यवहार बन्ध हो जाएँगे | **परिणामस्वरूप समग्र जनता सरकार की गुलाम बन जाएगी | और चाहे कोंग्रेस हो या भाजप सभी सरकारें (विश्व की प्राय: सभी देशो की सरकार भी) UNO की तो गुलाम है ही !** याद रहे ! प्रत्येक सरकार

UNO के साथ हुए करार, भूतकालीन कर्जा एवं धमकीओं आदि के कारण गुलाम है | प्रत्येक महत्त्वपूर्ण निर्णय उपरवालें जबरदस्तीं सरकार पर थोपते है और सरकार को उसका अमल करवाना ही पड़ता है|

अब सरकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता तो ही नहिं, परन्तु धार्मिक स्वतंत्रता पर भी हाथ मार सकेगी | जिस तरह हाल ही में जगन्नाथपुरी की 285 वर्ष की परंपरा तुड़वाने का प्रयास हुआ था, जो कि शंकराचार्यजी की सक्रियता से टींकी रही | बाकी अहमदाबाद में तो परंपरा तूटी ही ! इसी तरह भावी में भी कोई भी प्रकार का नियम आ सकता है और मीडिया उन नियमों एवं नियंत्रणों को व्याजबी ठहराएगी | आज दारु की दुकानें खुल्ली है, मंदिरों में पूजा-अर्चना बन्ध है, क्या कोई विरोध कर रहा है ? भयभीत प्रजा हमेशां शासकों को सामने से ही अपनी स्वतंत्रता का भोग दे देती है | उसमें उन्हें अत्याचार एवं अन्याय नहीं लगता है, उल्टा खुश होती है | याद रखना इस सरकार ने स्वतंत्रता पर झपट लगाई है, तो आनेवाली सरकारों में दुगुनी हिंमत आ जायेगी |

क्रिप्टो करंसी के प्लान का सूचन षड्यंत्रकारीओंने 'ध इकोनोमिस्ट' में 1988 में दिया था एवं लिखा था "वैश्विक चलन के लिए तैयार हो जाओ !" उनके प्लान के मुताबिक यह कार्य सन् 2018 में करना था, जो अब हो रहा है |

और अब यह कार्य तुरंत ही संपन्न करना पड़ेगा | यह उनकी मज़बूरी भी है, क्योंकि डॉलर सतत टूट रहा है | 1913 में जब फेडरल रिजर्व की स्थापना हुई तब 1 डोलर=1 औंस सोना था | 1960 में जब उन्होंने गोल्ड स्टाण्डर्ड छोड़ा तब 20 डॉलर =1 औंस था | और आज 1908 डॉलर = 1 औंस है | अमेरिकी निष्णांत बार-बार चेतावनी दे चूके है कि डॉलर का आयुष्य पूरा होने पर है | फेडरल रिजर्व कि जिसके पास डॉलर छापने का एकाधिकार है, वह संपूर्ण रुप से प्राईवेट कंपनी है, जो इल्युमिनाटी की है | एवं उन्होंने U.N.O. के कार्य सिद्ध करने एवं खास तो वर्ल्डबैंक द्वारा विश्वके सभी देशो को लोन देकर गुलाम बनाने के लिए बेहिसाब नोट छाप रखी है | (हाल लोकडाउन में बेरोजगारों को भत्थे के रूप में 300 करोड़ दिए थे, ताकि भूखे लोग रास्ते पर न उतर पड़े |) पर यह मात्र छापना है उसको गोल्ड का कोई सपोर्ट नहीं है | जबकि होना यह चाहिए कि जितना सोना हो उतनी ही नोट छापनी चाहिए | इस दुर्नीति के कारण डॉलर गिरने के कगार पर है और वह गिर गया तो संपूर्ण विश्व पर डॉलर राज द्वारा जो कंट्रोल है वह टूट जाएगा | UNO विगैरह सभी संस्थाएँ अचानक बन्ध हो जाएगी | इस दुर्घटना के पहेले यदि क्रिप्टो करंसी आ जाएगी तो वो बच सकते है | क्योंकि वैसे भी क्रिप्टो करंसी को सोने के साथ सम्बन्ध नहीं है | वह मात्र ब्लोकचेईन सिस्टम पर आधारित काल्पनिक करन्सी है | और वे लोग जान पर आकर भी हमारे पास यह करवाऐंगे ही | उनके पास बहुत कम समय है, उसके बाद यदि डॉलर चौपट हो गया तो बाजी गई |

इसके सामने भारत सरकार की अपनी अलग समस्या है | **भारत की लगभग सभी बैंक दिवाला निकालने की तैयारी में है** | प्रजा की जमा सम्पत्ति में से 90% से ज्यादा रकम तो बडें उद्योगपतिओं को लोंन में दे दी है | अब वे उद्योगपति लोन भरने के लिए सक्षम नहीं है एवं मात्र 2-5% की किंमत की जमीन गारंटी के रूपमें बेंको को गिरवी दि हुई है | राजनेताओं की पहचान से उनकी तो बात बन गई, परन्तु अब प्रजा के पैसे का क्या ? अभी कुछ बेंकों का मर्जिंग हुआ है, उसका कारण यही था | ऐसे में यदि प्रजा का विश्वास बैंको पर से उठ गया तो पूरा सरकारी तंत्र ही टूट जाएगा | क्योंकि सरकारी तंत्र करंसी पर चलता है और तब कागज की नोटों की कोई किंमत नहीं होगी | तूर्की में लोगों ने इसी तरह करंसी पर अविश्वास से प्रेरित होकर फिर 15 दिनमें 7 अबज डॉलर का सोना खरीद लिया ! क्योंकि, करंसी की वेल्यु रहे या ना रहे, मगर सोनें की किंमत तो अक्बंध रहेगी |

यह दुर्घटना को टालने के लिए भारत में डिजिटल करंसी जरूरी है | और अब से सभी सहकारी बैंक RBI के नीचे काम करेगी | संकट समय में RBI बड़े भाई का काम करेंगी | ऐसा निर्णय क्यों करना पडा ? इस तरह सभी बैंक RBI के हाथ में जाने से सरकार को जैसा बदलाव करना हो, वह कर सकती है |

भारत के प्रधानमंत्री का वीडियो यू-ट्यूब पर महीनों पहले आ गया है | जिसमें वे यह साबित करने का प्रयास कर रहे है कि डिजिटल करंसी अच्छी एवं सुरक्षित है | संक्षेप में, हमारे पास समय कम है | यदि डिजिटल करंसी आ गई तो समाज एवं धर्म, दोनों सरकार के गुलाम बन जायेंगे | वे त्यौहार, मेले एवं यात्राओं को सीमित कर सकते है | मंदिरों के भंडार भी लूंट सकते है | वे हमें धर्मांतरण करने के लिए मजबूर भी कर सकते है यह सब वे तत्काल नहीं करेंगे, पहले डिजिटल करंसी पर प्रजा का विश्वास जीतेंगे | शुरुआत में तो भोली प्रजा को सब अच्छा ही लगेगा, परन्तु जब गुलामी गले पड जाएगी तब कुछ भी कर नहीं सकेंगे | **पैसा ही एक ऐसी चीज है, जिसके द्वारा सभी को गुलाम बनाया जा सकता है और वही अब होने वाला है** |

→ 5G तकनीक आ रही है । यह राष्ट्रीय डिजिटल करन्सी के लिए अनिवार्य है। क्योंकि 4G में लेनदेन का व्यवहार धीमा चलेगा, अक्सर सिस्टम हैंग भी हो सकती है | चीप के जरिये जासूसी करने के लिए भी 5G अनिवार्य है | मगर, यह 5G कैंसर जैसी दर्दनाक बीमारी भी लाता है। इस मुद्दे पर ही **अमेरिका में लोगों ने 5G टावरों को ध्वस्त कर दिया ।** वे मानते है कि 5G आने के बाद उनकी रोग-प्रतिकारक शक्ति कमजोर हो गई है, और यही कारण है कि दुनिया भर में सबसे अधिक कोरोना ले केस वहाँ है |

लेकिन दूसरी सबसे खतरनाक चेतवनी कहीं सारें विद्वान दे रहे है । कुछ समय बाद इसके टॉवर 100-100 मीटर की दूरी पर होगे, साथ में अद्यतन हाइ-रिज़ॉल्यूशन वालें कैमरें होंगे । मौजूदा C.C.T.V. कैमरे में दृश्य स्पष्ट रूप से दिखते नहीं है। ये कैमरे चोरी आदि को

रोकने के बहाने लगाए जाऐंगे, लेकिन वास्तव में जनता की जासूसी के लिए होंगे । निकट भविष्य में, जो लोग ग़ुलामी के कानून का भंग करेंगे, वो कैमरे पर पकड़े जाऐंगे, तत्कालीन स्मार्ट पुलिस, पुलिस स्टेशन में बैठे ही कैमरे के माध्यम से अपराधी का चेहरा पकड़ लेंगे। जिसमें फेस रेकग्नेशन सिस्टम से प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे के आधार पर उसका नाम सहित अन्य जानकारी पुलिस को उपलब्ध होगी । जरूरत पड़ने पर व्यक्ति के बैंक खाते को सील करने का आदेश भी देगी ।

इन सभी सुविधाओं (!) के लिए हाइ-रिशोल्युशन इमेज की हेरफेर के लिए 5G आवश्यक है। 4G ऐसा करने में असमर्थ है।

यह 5G आरोग्यनाश + जासूसी + आर्थिक गुलामी का साधन बनने वाला है । यह सब हाल ही में नहीं होगा, लेकिन अगले 5-7 वर्षों में बीमारी इतनी गंभीर हो जाएगी कि बचना असंभव होगा! यह एक काल्पनिक कहानी नहीं है, वास्तविकता है |

→ ऑनलाइन शिक्षा के लिए Google और जियो के बीच 45,000 करोड़ का सौदा हुआ है । इसकी पूर्वभूमिका के रूप में, "वन नेशन वन बोर्ड" कि नई शिक्षा नीति लागू की गइ है । अब केंद्र सरकार द्वारा तैयार किया गया अभ्यासक्रम देश के हर कोने के बच्चों को पढ़ाया जाएगा । **भविष्यमें यदि सेक्स एज्युकेशन को भी इसमें शामिल किया जाता है, तो आश्चर्यचकित ना होना !** क्योंकि, यह अभ्यासक्रम UNICEF और UNESCO (U.N.O. की संतानरूप वैश्विक संगठन) द्वारा बनाकर भेजा जाएगा, सरकार भी इसे पढ़ाने के लिए मजबूर होगी, अमेरिका में केवल 3 साल के बच्चों को भी यौन शिक्षा दी जाती है ! हाँ ! केवल तीन साल के....

उपर से, यदि प्रत्येक बच्चे के पास ऑनलाइन शिक्षा के लिए एक मोबाइल होगा, तो अध्ययन के घंटों को छोड़कर वह क्या देखता है, कौन ध्यान रखेगा ? यह बच्चों को चारित्र्यभ्रष्ट करने की एक चाल है ।

बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण में कुछ भी समझ में नहीं आता है, दोस्तों के साथ मिलना कम हो गया है, इससे बच्चे डिप्रेशन में जा रहे है । आत्महत्या का सोचते है । 23/9/20 को प्रगट हुए **एक सर्वे के मुताबिक़ 70% माता-पिता का कहना है कि, ओनलाईन शिक्षण से उनके बच्चों का स्वभाव बिगड़ गया है** | 12.44 % बच्चों में गुस्सा बढ़ा, 16.63% बच्चों का स्वभाव चीडचीडा हुआ | 22.74 % बच्चें जैल में होने जैसा अनुभव कर रहे है !! 39.23 % बच्चें कंटाला महसूस करते है | यह सब डिप्रेशन का ही कमाल है |

लंबे समय तक मोबाइल या कम्प्यूटर के सामने बैठने से दिमाग रोबोट की तरह संवेदनाहीन हो जाएगा। और ऐसे ही लोगों को आसानी से गुलाम बनाया जा सकता है !!!

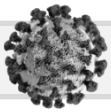

हम क्या कर सकते है ?

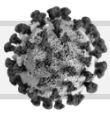

(1) कोरोना से डरना बंद करे और परिचितों तथा अन्य लोगों को यह जानकारी देकर भयमुक्त करे | समाज को निर्भय बनाना, समाज कल्याण का सबसे बड़ा कार्य है।

(2) जिन लोगों ने डर के मारे धर्मकार्यों को त्याग दिया है, उनकी धर्मक्रिया फिर से शुरू करवाकर पुण्यबल का निर्माण कर सकते है।

(3) किसी भी परिस्थिति में लोगों को कोरोना की दवाई या वैक्सीन नहीं लेने के लिए सख्ती से तैयार कर सकते हैं। अनिवार्य टीकाकरण की योजना है। नीता अंबानी द्वारा की गई घोषणा के अनुसार, 'जियो' देश के हर गाँव तक टीका पहुँचाएगा। लेकिन अब लोगों में जागरूकता आई है, लोगों को षड्यंत्र समझ में आने लगा है। जिससे अनिवार्य टीकाकरण का अमल करवाना मुश्किल है। इस तरह, जागरूकता बढ़ाना ही एकमात्र बचाव है।

(4) आप क्वांटम टैटू/चीप्स से दूर रहने के लिए लोगों को तैयार कर सकते है।

(5) और खास, डिजिटल करन्सी का अर्थ है, सामने चलकर गुलाम होना। इसलिए सभी को समझाएं कि उनकी संपत्ति अब बैंक में सुरक्षित नही है, व्यक्तियों या धर्मादा ट्रस्टों की संपत्ति की सुरक्षा के लिए अब नए विकल्प के बारे में सोचना जरूरी हो गया है।

(6) लगातार सोश्यल मीडिया पर टीके और चीप / क्वांटम टैटू के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हो रहा है | **अधिक से अधिक युवा इस प्रचार में शामिल हो, प्रत्येक व्यक्ति तक यह जानकारी पहुंचे, इस हेतु प्रयत्न कर सकते है** |

(7) 5G से स्वास्थ्य पर होनेवाली गंभीर असर का अध्ययन कराए, सोश्यल मीडिया के माध्यम से जनता में उसका बहिष्कार कराए, **यदि 5G ग्राहक बनाने की तैयारी अभी से शुरू हो चूकी है, तो हमारा प्रचार भी अभी से शुरू हो जाना चाहिए।**

(8) लोगों को समझाकर स्कूल नाम की व्यवस्था का बहिष्कार कराए। 'कलानिकेतन' जैसे नाम के साथ एक नईवैकल्पिक शिक्षण प्रणाली बनाए। जिसमें समय की मांग के अनुसार कम्प्यूटर से लेकर गणित, भाषा, इतिहास, सामान्य ज्ञान जैसे सभी विषय सीखाए जाए | मगर **यह नई व्यवस्था सरकारी हस्तक्षेप से मुक्त होते विदेशी लोगों की दखल-अंदाजी नहिं होगी** |

सब कुछ तत्काल करना होगा | हमारी पूरी ताकत लगानी होगी ! जब राजतंत्र गुलाम बन गया है, तो यह हर प्रबुद्ध व्यक्ति की जिम्मेदारी बन जाती है कि वह लोगों को रास्ता दिखाए। शंकराचार्य डरे नहीं हैं, वह रथयात्रा के लिए आगे आए थे, वैसे हम सभी अपने

अधिकारों के लिए क्यों नहीं बोल सकते है ? भय को हटाओ । अगर हम आज बोलने से डरते हैं, तो हम धर्म और लोगों को गुलाम बनते देखेंगे।

(इस विषय में अधिक जानकारी के लिए,

- ✓ 'Biswaroop/Corona' वेबसाइट पर मौजूद वीडियो उपयोगी है।
- ✓ डॉ. बिश्वरूप रॉय चौधरी ने 'Corona-The Scandal of Millenium' नामक पुस्तक लिखी है। (हिंदी में भी उपलब्ध है)
- ✓ डॉ. तरुण कोठारी ने भी 'Corona Pandemic Scandal' बुक लिखी है | (हिंदी में भी उपलब्ध है)
- ✓ श्री मनीष आचार्य के क्लिप भी प्रसारित होते है।
- ✓ वरिष्ठ पत्रकार श्री संजयभाई वोरा ने भी एक किताब लिखी है, **'कोरोना : सत्यका संशोधन'** | प्रस्तुत पुस्तिका के लिए बहुत सी आधारभूत जानकारी उनके लेखसंग्रह से प्राप्त की गई है। धन्यवाद ...

इस टेलिग्राम चेनल की लिंक में जूड़ने से आपको इस विषय की भरपूर जानकारियाँ मिलेगी |

https://t.me/forebetterlife

कुछ पढ़ने लायक किताबें :

- ♣ Illuminate-Henry Makow (Ph.d.)
- ♣ Rise of New World Order :
  The Culling of man-J. Michael Thomas Hays
- ♣ इल्युमिनाती - उदयराज सिंह & धीरज चौधरी (हिंदी) (M. 8586918719)
- ♣ बैंको का मायाजाल - रवि कोहाड (हिंदी) (M. 8745026277)

देख लो ! श्रीमान् बिल गेट्सने किन-किन को पैसे देकर वश कीया है ! यही है इनकी चेरिटी !

5G के टावर में त्रिशूल की आकृति क्यों है, पता है ? धार्मिक चिह्न से इमोशनल होकर लोग टावर का ध्वंस ना करें, इसलिए |

डिजिटल ID 2020 के तहत आपको यह कार्ड दीया जाएगा | इसमें रही चीप को गुलामी का पट्टा ही मान लो !!

पेपर करंसी को जलाकर, उसमें से क्रिप्टो करंसी स्वरूपी फिनिक्स पक्षी को बहार लाया जा रहा है | (9-1-1988) सिक्के के नीचे की और टार्गेट साल २०१८ लिखी है |

अमर उजाला 20/10/20

जांच बढ़ाने के लिए भारत को मिले 55 लाख डॉलर

नई दिल्ली। भारत में कोरोना जांच की रफ्तार को तेज करने के लिए अमेरिकी एनजीओ रॉकफेलर फांउडेशन ने 55 लाख डॉलर की सहायता राशि देने की घोषणा की है।

यह राशि सेंटर फॉर सैल्युलर एंड मॉलिक्युलर प्लेटफॉर्म और पथ संगठन के जरिये खर्च की जा सकेगी। जांच बढ़ाने के साथ-साथ इस अनुदान के जरिये डाटा एवं टेक्नोलॉजी के माध्यम से महामारी की निगरानी हो सकेगी। भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. विजय राघवन का कहना है कि फाउंडेशन के सहयोग से अनुसंधान संस्थान लघु एवं मध्यम उद्योगों को कम लागत पर विश्व स्तरीय मानकों से युक्त मॉलिक्युलर डायग्नोस्टिक में सक्षम बना सकेंगे। पथ संगठन के निदेशक नीरज जैन ने बताया कि उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और पंजाब में कोविड जांच क्षमता को विस्तारित करने के लिए उनके संगठन को अनुदान मिला है। इसके जरिए राज्य सरकारों को जांच के लिए अनुकूल रणनीतियां बनाने में भी मदद करेगा। ब्यूरो

Vaccine on which a lot of people are pinning their hopes on and Gates is no different. "Short of a miracle treatment, which we can't count on, the only way to return the world to where it was before COVID-19 showed up is a highly effective vaccine that prevents the disease."

Elaborating on how the vaccine plan should be mobilised, Gates wrote, "the goal is to pick the one or two best vaccine constructs and vaccinate the entire world—that's 7 billion doses if it is a single-dose vaccine, and 14 billion if it is a two-dose vaccine. The world will be in a rush to get them, so the scale of the manufacturing will be unprecedented and will probably have to involve multiple companies."

OPEN IN APP
AD MENSXP
Here's How To Bring Out Your Atrangi Side

28-3-2020 का कवरेज देखें |

मार्च से मई के बीच पिछले साल से हुई तुलना NBT

कोरोना के बीच मौतें कम? डेथ सर्टिफिकेट एक तिहाई घट गए

Sudama.Yadav@timesgroup.com

नई दिल्ली : दिल्ली मे कोरोना मृतको की संख्या रोज बढ़ रही है, लेकिन क्या राजधानी मे सर्टिफिकेट के आधार पर कुल मौतो का आंकड़ा पिछले साल से काफी कम हो गया है। पिछले साल मार्च से मई महीने तक साउथ और नॉर्थ एमसीडी ने 22,560 डेथ सर्टिफिकेट जारी किए थे। इस साल इन तीन महीनो मे 14,597 डेथ सर्टिफिकेट जारी किए है, जो 35% कम है।

साउथ और नॉर्थ एमसीडी अफसरों के अनुसार, कोरोना संक्रमण के मृतको की रोजाना रिपोर्टिंग हो रही है। इससे ऐसा लग रहा है कि दिल्ली में मृतकों की संख्या पहले की तुलना काफी बढ़ गई है पर ऐसा नहीं समझा जाना चाहिए।

एमसीडी ने इस साल मार्च से मई महीने के बीच पिछले साल की तुलना मे 7963 डेथ सर्टिफिकेट कम जारी किए है। सूत्रों का कहना है कि एक वजह यह भी हो सकता है कि लॉकडाउन के दौरान कई परिवारों ने डेथ सर्टिफिकेट हो न लिया हो, लेकिन इससे आंकड़ों मे ज्यादा अंतर नहीं आनेवाला। इस साल मार्च के बाद डेथ सर्टिफिकेट काफी जारी किए गए है।

अनलॉक 1 के बाद दिल्ली की ओखला मंडी में कुछ पहल पहल नजर आई। गुरुवार को यहां सैनिटाइजेशन का काम भी किया गया।

दिल्ली में रेकॉर्ड, 1877 नए मरीज, 65 की मौत

राजधानी दिल्ली में बीते 24 घंटे में कोरोना के रेकॉर्ड 1877 नए मामले सामने आए हैं। वहीं, गुरुवार को कोरोना की वजह से 65 लोगों ने अपनी जान गंवाई जो अबतक का

'निजी अस्पताल कर सकते हैं कोरोना टेस्ट'

दिल्ली हाई कोर्ट ने कोविड-19 टेस्ट के मुद्दे पर निर्देश दिया कि सभी निजी अस्पताल 20 फीसदी बेड कोरोना के मरीजों के लिए रिजर्व रखें। उनकी लैब में कोविड-19 टेस्ट के लिए जरूरी उपकरण और साधन

लो ! करलो बात ! महामारी के दौरान डेथ सर्टिफिकेट 1000 गुने बढ़ने चाहिए या फिर एक-तृतीयांश घटने चाहिए ?

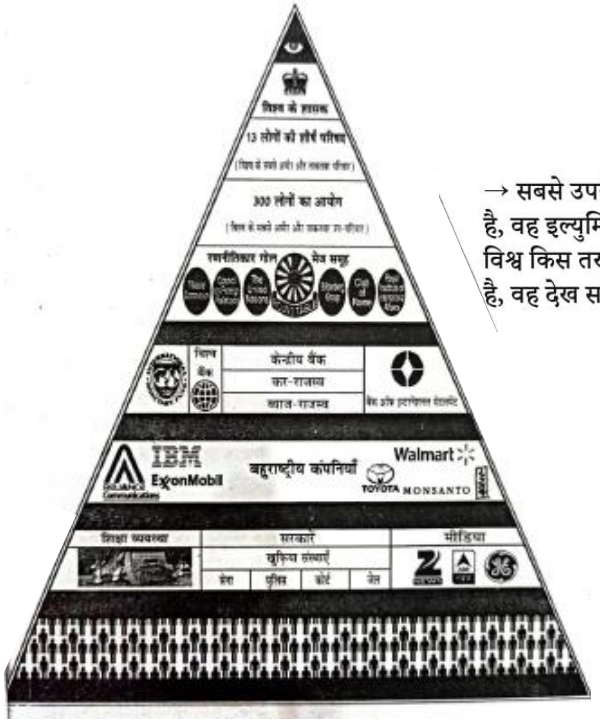

→ सबसे उपरी भाग में जो आंख दिख रही है, वह इल्युमिनाटी का चिह्न है । समग्र विश्व किस तरह से उसके नीचे कन्ट्रोल में है, वह देख सकते हो ।

Ethical questions surround vaccine to reduce fertility

Jacob Puliyel
Published May 26, 2018,7:09 pm,Updated,May 26, 2018,7:09 PM

The prestigious journal *Nature Medicine*, in its February issue reported that the Indian Council of Medical Research (ICMR) is to do a clinical trial of a tetanus toxoid vaccine (TT) laced with a pregnancy hormone, human chorionic gonadotropin (hCG). It is to be studied on 120 women in India.

This "vaccine" against pregnancy was developed by Dr G.P. Talwar in 1972. The idea is to produce antibodies to the pregnancy hormone, such that the women would not be able to carry a normal pregnancy. Women who were pregnant would abort and those not pregnant would be rendered infertile. The report is indeed disturbing. A few months earlier an article entitled "HCG Found in WHO Tetanus Vaccine in Kenya Raises Concern in the Developing World" was published by Oller and colleagues in the *Open Access Library Journal*.

https://www.geo.tv › pakistan

Only 3% Pakistanis are clear-headed about coronavirus: Ipsos poll - Geo.tv

09-Jun-2020 - The survey report highlighted that Pakistani women are likely to have three times more clarity than men regarding COVID-19 ...

Kenyan Bishops not Satisfied with Government Response to Vaccine Controversy.

Kenyan Bishops Still believe that Tetanus Toxoid vaccines laced with anti-pregnancy drug

Anne Morse
January 21, 2015

The concern that the neonatal tetanus vaccines in Kenya sponsored by the World Health Organization, are laced with sterilizing agents first arose months ago, and the uncertainty continues as the newest round of testing produced another inconclusive standoff between the Catholic Health Commission of Kenya and the Ministry of Health.

W.H.O. द्वारा केन्या में महिलाओं को दी गई वैक्सीन प्रजननशक्तिनाशक साबित हुई है, जिससे वहाँ के बिशोप अत्यधिक नाराज़ हुए थे !

इस पुस्तिकाकी PDF पाने के लिए

यह QR कोड स्कैन करें अथवा लिंक

http://qrgo.page.link/VHu9c पर जायें |

- होस्पिटलोमें अंगतस्करी होती है ऐसे आक्षेप बेसुमार आ रहे है |
- होस्पिटलोमें दवाइओं के प्रयोग से सेंकडो जाने गई है ऐसे आक्षेप किए जा रहे है |
- साथ ही होस्पिटलों में आइसोलेशन आदि नियंत्रणो के कारण जीवन जहर बन जाता है |

एसी विकट परिस्थिति में

यदि आपको कोरोना हो गया तो आप क्या करेंगे ?

- देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त डो. बिश्वरूप रॉय चौधरीने आयुष मंत्रालय द्वारा प्रमाणित त्रिदिवसीय डायट प्लान बनाया है | जिसमें एक भी गोली लिए बिना मात्र आहारविधि से आज तक ५०,००० से ज्यादा लोगों को कोरोना मुक्त किया गया है | जिसमें सुगर, बी. पी., हार्ट, वृद्धावस्था वाले सेंकडो क्रिटिकल केस भी शामिल है | महत्त्व की बात तो यह है कि- आज तक एक भी केस फेइल नहीं हुआ, नाहीं किसी को होस्पिटल के हवाले करना पडा |
- यह आहारविधि की जानकारी के लिए www.biswaroop.com/nice में online फॉर्म भरोंगे तो कुछ घंटो में वे सामने से ही आपका संपर्क करेंगे तथा आपकी रिपोर्ट नेगेटिव न आए तब तक दिन में ४-५ बार आपकी देखरेख करेंगे वह भी एक भी रूपये का खर्च किए बिना...

क्या आप कोरोना से बहुत गभराते हो ?

क्या आप होस्पिटल जाने की तैयारी में हो ?

क्या आप कोरोना की टीके की राह देख रहे हो ?

तो रुकिए...

यह पुस्तिका एक बार अवश्य पढें |

यह पुस्तक पढने के बाद आप संपूर्ण निर्भय बन जायेंगे |

जिसकी कोई दवाइ ही नहीं उसकी दवा लेने

अस्पताल में दोड़ जाने की नादानियत छोड़ देंगे और

टिके में तो आपको जहर के ही दर्शन होंगे |

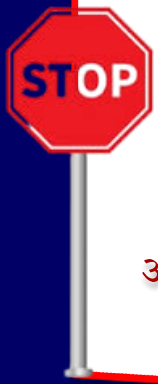

यह कोई पुस्तिका नहीं है, यह है

आपके डरे हुए मन का काऊन्सेलिंग करनेवाला

माइण्ड इम्युनिटी बुस्टर !!

यह बुक की Pdf प्राप्त करने बाजू के QR कोड स्केन करे या लिंक पर जाए https://qrgo.page.link/QfMVa

यह षड्यंत्रकी विशेष माहिती प्राप्त करने के लिए टेलिग्राम चेनलमें जुडने के लिए https://t.me/joinchat/AAAAAFb601xWLIcuO_gqra